nandgaon times march-12-5.qxd 3/11/2025 11:56 PM Page 1

स्वच्छता सर्वेक्षण 2024 के लिये... पृष्ठ 2 | पर्यावरण संरक्षण के लिये गोबर... पृष्ठ 3


# नांदगांव टाइम्स

बुधवार, 12 मार्च 2025, राजनांदगांव | आरएनआई 30910/76 | वर्ष 49, अंक 147, पृष्ठ 04, मूल्य 3 रुपए





।। जय श्री जलाराम ।।

श्री जलाराम प्रॉपर्टी डीलर

उचित दर पर मकान, फ्लैट, डुप्लेक्स, दुकान, ऑफिस, गोदाम, जमीन, प्लाट की खरीदी-बिक्री हेतु संपर्क करें।

नोट :- मकान, फ्लैट, दुकान, गोदाम किराये पर लेने एवं देने की विशेष व्यवस्था साथ ही जमीन प्लाट हेतु डायवर्सन के दस्तावेज व ऋण पुस्तिका बनवाने के कार्य की सुविधा।

ऑफिस- बागड़ी ब्रदर्स के बाजू में, रामाधीन मार्ग, राजनांदगांव।

मो: 98274-61508, 83192-88559

## जनजातीय समाज के विकास को नई दिशा देने मुख्यमंत्री साय की अध्यक्षता में जनजाति सलाहकार परिषद की पहली बैठक



रायपुर। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय की अध्यक्षता में आज छत्तीसगढ़ जनजाति सलाहकार परिषद की पुनर्गठन पश्चात पहली बैठक विधानसभा परिसर स्थित समिति कक्ष में संपन्न हुई। बैठक में जनजातीय समुदाय के सशक्तिकरण, शिक्षा, सामाजिक-आर्थिक उन्नयन, प्रशासनिक सुधार और संस्कृति संरक्षण से जुड़े अहम मुद्दों पर विचार-विमर्श किया गया।

बैठक में कैबिनेट मंत्री एवं जनजाति सलाहकार परिषद के उपाध्यक्ष श्री रामविचार नेताम सहित प्रदेश के वरिष्ठ मंत्रीगण, विधायक, प्रशासनिक अधिकारी एवं परिषद के सभी सदस्य उपस्थित रहे। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने परिषद की पहली बैठक में सभी सदस्यों का स्वागत करते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ में जनजाति समुदाय की जनसंख्या 32त्न है, और उनका समग्र विकास हमारे राज्य की प्राथमिकता है। यह परिषद केवल विचार-विमर्श का मंच नहीं, बल्कि नीति-निर्माण और निर्णय-क्रियान्वयन की महत्वपूर्ण संवैधानिक इकाई है।उन्होंने बैठक में रखे गए सभी बहुमूल्य सुझावों पर त्वरित कार्रवाई के निर्देश दिए और अधिकारियों से कहा कि जनजातीय समुदाय के जाति प्रमाण पत्र से जुड़ी त्रुटियों के निवारण हेतु विस्तृत अध्ययन कर समाधान सुनिश्चित किया जाए। जनजातीय आस्था स्थलों के संरक्षण एवं विकास हेतु देवगुड़ी के साथ-साथ सरना स्थलों को भी शामिल करने की व्यवस्था की जाए। शिक्षा में सुधार हेतु आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षक विहीन और एकल शिक्षक स्कूलों की समस्या को शीघ्रता से हल किया जाए। जनजातीय समुदाय की आर्थिक सशक्तिकरण योजनाओं पर प्रभावी अमल किया जाए, जिससे उनकी प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि हो।

कैबिनेट मंत्री श्री रामविचार नेताम ने कहा कि छत्तीसगढ़ जनजाति सलाहकार परिषद, सरकार और जनजातीय समाज के बीच एक मजबूत सेतु का कार्य करती है। हम सभी सदस्य प्रदेश के एक-तिहाई जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करते हैं, इसलिए हमारी जिम्मेदारी है कि हम शासन की योजनाओं को प्रभावी रूप से समुदाय तक पहुँचाएँ।उन्होंने परिषद द्वारा लिए गए निर्णयों को नीति-निर्माण में प्रभावी रूप से शामिल करने का आश्वासन दिया। बैठक में सभी उपस्थित सदस्यों ने जनजातीय समुदाय की शिक्षा, आजीविका, सामाजिक-आर्थिक विकास और प्रशासनिक सुधार को लेकर ठोस सुझाव दिए। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने सभी प्रस्तावों पर त्वरित और प्रभावी क्रियान्वयन के निर्देश दिए एवं अधिकारियों को यह सुनिश्चित करने को कहा कि नीतिगत सुधारों का वास्तविक लाभ जनजातीय समुदाय तक पहुँचे। यह बैठक जनजातीय समाज के विकास और आत्मनिर्भरता की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होगी।



बैठक में परिषद के सदस्यों ने जनजातीय समुदाय के सामाजिक-आर्थिक विकास से जुड़े कई महत्वपूर्ण विषयों पर अपने सुझाव प्रस्तुत किए, जिनमें जनजातीय बालिकाओं के लिए छात्रावासों की संख्या एवं सुविधाओं में वृद्धि, जनजातीय बहुल क्षेत्रों में स्थानीय स्तर पर रोजगार एवं भर्ती प्रक्रिया को प्रोत्साहित करना, स्वास्थ्य सेवाओं की बेहतर उपलब्धता एवं जनजातीय क्षेत्रों में चिकित्सा सुविधाओं का विस्तार, आदिवासियों की पारंपरिक आजीविका को सशक्त करने हेतु विशेष योजनाएँ लागू करना,जनजातीय कला, संस्कृति एवं परंपराओं के संरक्षण और संवर्धन के लिए विशेष योजनाएँ लागू करना शामिल है। बैठक में आदिम जाति एवं अनुसूचित जाति विकास विभाग के प्रमुख सचिव श्री सोनमणि बोरा ने विभिन्न एजेंडा बिंदुओं पर प्रेजेंटेशन दिया और परिषद के समक्ष विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की। इस अवसर पर वन मंत्री श्री केदार कश्यप, विधायक सुश्री लता उसेण्डी, श्रीमती शंकुतला सिंह पोर्ते, श्रीमती उद्देश्वरी पैंकरा, श्रीमती रायमुनी भगत, श्रीमती गोमती साय, विधायक श्री रामकुमार टोप्पो, श्री प्रणव कुमार मरपच्ची, श्री विक्रम उसेण्डी, श्री आशाराम नेताम, श्री नीलकंठ टेकाम, श्री विनायक गोयल, श्री चैतराम अटामी सहित मनोनित सदस्य श्री रघुराज सिंह उईके एवं श्री कृष्ण कुमार वैष्णव उपस्थित थे। बैठक में वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों की महत्वपूर्ण उपस्थिति रही, जिनमें मुख्य सचिव श्री अमिताभ जैन, पुलिस महानिदेशक श्री अरूण देव गौतम, अपर मुख्य सचिव श्री मनोज कुमार पिंगुआ, श्रीमती ऋचा शर्मा, मुख्यमंत्री के प्रमुख सचिव श्री सुबोध सिंह, पंचायत विभाग की प्रमुख सचिव श्रीमती निहारिका बारिक सिंह, स्वास्थ्य विभाग के सचिव श्री अमित कटारिया , सचिव श्री राजेश सुकुमार टोप्पो, स्कूल शिक्षा विभाग के सचिव श्री सिद्धार्थ कोमल परदेशी, आयुक्त श्री पदुम सिंह एल्मा सहित अन्य अधिकारीगण उपस्थित थे।

## एमसीएच में ईलाज के नाम पर रिश्वत मांगने का वीडियो वायरल



### दंत रोग विभाग का प्रकरण

**राजनांदगांव ( नांदगांव टाइम्स )।** धरती के भगवान कहे जाने वाले डॉक्टर इंसानियत और अपना फर्ज दोनों ही भूलते नजर आ रहे हैं। चिकित्सा को शर्मसार करने का ताजा मामला राजनांदगांव के पेंड्री स्थित मेडिकल कॉलेज सह अस्पताल के डेंटल विभाग का है, जहां कार्यरत संविदाकर्मी डॉ. विनीता द्वारा इलाज के नाम पर रिश्वत लेने का मामला सामने आया है। राजनांदगांव निवासी मरीज मनोज सोनी का आरोप है कि उनसे इलाज के एवज में डॉक्टर ने रिश्वत की मांग की थी, जिसका उन्होंने वीडियो बना लिया। इस मामले में डेंटल विभाग से बात की गई तो एचओडी मामले को दबाने का प्रयास करने लगी। मामला पेंड्री स्थित मेडिकल कॉलेज सह अस्पताल का है, जहां मरीज मनोज सोनी दांत में तकलीफ होने पर इलाज के लिए मेडिकल कॉलेज पहुंचे। वहां उन्हें एक्सरे करवाने के लिए कहा गया। मनोज सोनी का आरोप है कि एक्सरे की रिपोर्ट दिखाने पर डॉ. विनीता ने उन्हें कहा कि इसका इलाज मेडिकल कॉलेज में नहीं होता है। मेडिकल कॉलेज में इलाज के लिए कोई सामान भी नहीं है। मैं अपने घर से सामान लाकर आपका इलाज कर दूंगी, इसके लिए साढ़े दस हजार रुपये लगेंगे। एक साइड के दांत के लिए 8 हजार लगेगा और दूसरे साइड कद दांत के लिए ढाई हजार रुपये लगेगा। पहले एक तरफ का ट्रीटमेंट करेंगे, जिसमें ढाई हजार रुपए खर्च आएगा। शनिवार या रविवार के दिन इसका ट्रीटमेंट कर दूंगी। इस मामले में मेडिकल कॉलेज सह अस्पताल के असिस्टेंट सुप्रिटेंडेंट व पीआरओ डॉ. पवन जेठानी ने बताया कि इसकी सूचना हमें मिली है, कि डॉ. विनीता ने ट्रीटमेंट के नाम पर पैसे की डिमांड की है। एमएस के संज्ञान में लाकर जांच करवाई जाएगी और जांच के बाद जो भी उचित कार्रवाई होगी की जाएगी। उनका वीडियो जो आया है, उसे कमिटी में सामने भी रखा जाएगा।

**यह पहली बार नहीं है, जब राजनांदगांव मेडिकल कॉलेज में अनियमितता का मामला उजागर हुआ हो। मेडिकल कॉलेज में आये दिन मरीजों से इलाज के नाम पर वसूली करना, प्राइवेट अस्पतालों में रिफर करना, सरकारी डॉक्टर्स के द्वारा निजी पैथोलोजी लैब में टेस्ट के लिए लिखना जैसी शिकायतें मिलती रहती हैं। सरकार द्वारा करोड़ों रुपये खर्च किये जा रहे हैं, कि आर्थिक रूप से कमजोर मरीजों को निःशुल्क इलाज मिल पाए, लेकिन डॉक्टर्स हर जिम्मेदार अधिकारी शासन की योजनाओं को पलीता लगाने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं। बहरहाल देखना होगा इस मामले में मेडिकल कॉलेज प्रबंधन क्या कार्रवाई करता है।**

**डॉ. पवन जेठानी, पीआरओ, मेडिकल कॉलेज सह अस्पताल**

## डोंगरगांव में नि:शुल्क स्वास्थ्य मेला सम्पन्न

**डोंगरगांव ( नांदगांव टाइम्स )।** संचालनालय, आयुष (आयुर्वेद, योग एवम प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध एवम होम्योपैथी), रायपुर,के निर्देशन एवम जिला आयुर्वेद अधिकारी राजनांदगांव के कुशल मार्गदर्शन में राष्ट्रीय आयुष मिशन योजनांतर्गत 10 मार्च सोमवार को डोंगरगांव विकास खंडस्तरीय एक दिवसीय नि:शुल्क आयुष स्वास्थ्य मेला (आयुर्वेद एवम होम्योपैथिक चिकित्सा एवम जनजागरुकता शिविर) का आयोजन डोंगरगांव के पुराना अस्पताल परिसर में किया गया।



शिविर का शुभारंभ दिनेश गांधी जनपद अध्यक्ष,रंजीता पटौदी, नगर पंचायत अध्यक्ष अंजू त्रिपाठी, पार्षद गण पद्मिनी ठाकुर गायत्री यादव निर्मला मालेकर नफीशा सिद्धिक बडगुजर दीप्ती ठाकुर ममता उईके, डोंगरगांव भाजपा मंडल अध्यक्ष दीना पटेल एवम राम कुमार गुप्ता एवम कपिल पटौदी के गरिमामयी उपस्थिति में भगवान धन्वंतरि के पूजा अर्चना के उपरांत किया गया। शिविर में कुल 457 मरीजों ने अपना पंजीयन कराकर आयुष चिकित्सा पद्धति का लाभ लिया। शिविर में नेत्र जांच , बी .पी.जांच , शुगर जांच, दंत एवम मुख रोग जांच की भी व्यवस्था की गई थी , जिसके माध्यम से 48 मरीजों का शुगर जांच किया गया तथा 40 मरीजों का नेत्र जांच किया गया जिसमे से 32 मरीजों को चश्मा वितरण भी किया गया तथा 08 मोतियाबिंद के मरीजों को चिन्हांकित किया गया। शिविर में डोंगरगांव ब्लॉक प्रभारी डॉ. तपेश्वर सिंह के अतिरिक्त, आयुर्वेद चिकित्सक डॉ. वर्षा नागवंशी, डॉ. रेखा साहू, डॉ.आनंद भारद्वाज होम्योपैथिक चिकित्सक डॉ. प्रीति बोरकर, दंत चिकित्सक डॉ.इशिता बागची, नेत्र सहायक अधिकारी कुशल साहू, लैब टेक्नीशियन फार्मासिस्ट बिसाहू सिंह ठाकुर, सुनील अग्रवाल, सविता कुरेठी, बसंत सिंह राजपूत, सुमन कटझरे , सहित आयुष कर्मचारियों ने अपनी सेवाए दी।

## ईडी का गलत उपयोग लोकतंत्र के लिए घातक - नीरज कन्नौजे

**राजनांदगांव ( नांदगांव टाइम्स )।** शहर कांग्रेस दक्षिण ब्लॉक के महामंत्री नीरज कन्नौजे ने सोमवार को पूर्व मुख्यमंत्री एवं कांग्रेस के प्रदेश महासचिव भूपेश बघेल के भिलाई स्थित घर सहित कुछ और ठिकानों में ईडी का छापा पड़ने पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की है। श्री कन्नौजे ने कहा कि भूपेश बघेल के घर जो भी मिला उसका हिसाब देने वे तैयार है लेकिन क्या नान घोटाले, पनामा पेपर लीक, इंदिरा प्रियदर्शिनी बैंक घोटाला, चिटफंड घोटाला, नसबंदी कांड, अँखफोड़वा कांड, डीकेस घोटाले इत्यादि लंबी फेहरिस्त है इन सब की भी जांच ईडी करेगी क्या ? भाजपा भूपेश बघेल के लिए तभी से पीछे पड़ी हुई थी जब वह मुख्यमंत्री थे केंद्र की भाजपा नीत राजग सरकार श्री बघेल को शराब घोटाले में फसाकर बदनाम करने की लगातार कोशिश की गई है। अभी भी किसी ना किसी साजिश की तहत परेशान कर रही है कल भी ईडी को भेजा गया था उनके पुत्र से पूछताछ की गई केंद्र की नरेंद्र मोदी नीत सरकार अपने विपक्षियों के नेताओं साथ ही उनसे जुड़े उनके करीबियों को तथा उनके साथ रहने वाले अधिकारियों को पहले भी परेशान कर चुकी है।



ईडी सीबीआई आदि केंद्रीय जांच एजेंसी का गलत उपयोग भाजपा सत्ता में रहकर कर रही है यह दुर्भावना पूर्ण कार्यवाही टारगेटेड और निंदनीय हैं। श्री कन्नौजे ने आगे कहा कि भाजपा में भी कई नेता ऐसे हैं जो वित्तीय अनियमित के आरोपो से घिरे हुए हैं। समय-समय पर मामलों उछलता भी रहा है लेकिन उनके खिलाफ कोई जांच कोई कार्यवाही नहीं हुई हो रही है यह मां मौसी का भेद कानून में नहीं चलना चाहिए सबको बराबर दृष्टि से देखना चाहिए वास्तव में जो दोषी हो उन्हें ही सजा मिलनी चाहिए उन्हीं के खिलाफ कार्रवाई होनी चाहिए ना कि सत्ता का दुरुपयोग करके जांच एजेंसियों का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए।

## सूचना का अधिकार अधिनियम के संबंध में प्रशिक्षण कार्यशाला

**राजनांदगांव ( नांदगांव टाइम्स )।** छत्तीसगढ़ राज्य सूचना आयोग रायपुर के निर्देशानुसार सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 के प्रभावी क्रियान्वयन में आने वाली समस्या एवं शासन द्वारा जारी पोर्टल के संबंध में 19 मार्च 2025 को सुबह 11 बजे कलेक्टोरेट सभाकक्ष में सभी विभागों के प्रथम अपीलीय अधिकारियों व जनसूचना अधिकारियों का जिला स्तर पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया है। कार्यशाला में सभी संबंधित अधिकारियों को उपस्थित होने के निर्देश दिए गए है।

## श्रीमती वंदना आलोक तिवारी महिला शिखर सम्मान 2025 से सम्मानित

**रायपुर ( नांदगांव टाइम्स )।** वर्ल्ड ब्राह्मण फेडरेशन एवं सर्व युवा ब्राह्मण परिषद् छत्तीसगढ़ रायपुर द्वारा प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विप्र समाज के विविध क्षेत्रों में ख्याति प्राप्त महिलाओं का सम्मान किया गया। जिसमें छत्तीसगढ़ के अलग-अलग जिलों से विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य हेतु अपना विशिष्ट पहचान रखने वाली विदुषी विप्र महिलाओं का महिला शिखर सम्मान 2025 से सम्मानित किया गया। जिसमें राजनांदगांव जिले से शिक्षा एवं विप्र समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य हेतु, कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रायपुर के नवनिर्वाचित महापौर श्रीमती मीनल चौबे के कर कमलों से श्रीमती वंदना आलोक तिवारी को महिला शिखर सम्मान 2025 से सम्मानित किया गया। सम्मान में संयुक्त संचालक श्रीमती अर्पिता पाठक ,श्रीमती शताब्दी पांडेय, पार्षद श्रीमती सरीता दुबे, श्रीमती नमिता शर्मा व श्री अरविन्द ओझा जी शामिल हुये। श्रीमती पार्वती देवी रविशंकर मिश्रा ,, बलौदा बाजार ,की स्मृति में उनके सुपुत्र रमेश, सुरेश, राकेश द्वारा सम्मानित महिलाओं को साल व स्मृति चिन्ह भेंट दिया गया।यह आयोजन रायपुर के वृन्दावन हाल में संपन्न हुआ। इस आयोजन में अद्भुत व विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम ने संसद में उपस्थित समस्त आगन्तुकों का मन मोह लिया। वर्ल्ड ब्राह्मण फेडरेशन के प्रदेश अध्यक्ष श्री अरविन्द ओझा, श्रीमती गुणा निधि मिश्रा,श्री सुरेश मिश्रा , महिला विंग अध्यक्ष श्रीमती नमिता शर्मा, श्रीमती प्रीति मिश्रा, श्रीमती सुमन मिश्रा,श्री रज्जन अवस्थी,श्री सुनील ओझा, श्री अजय अवस्थी, श्री नीतिन कुमार झा, श्रीमती बबिता मिश्रा, श्रीमती वीणा मिश्रा आयोजक मंडल द्वारा महिला शिखर सम्मान का आयोजन सफलता पूर्वक संपन्न हुआ।

## जारवाही स्कूल में न्यौता भोज कराया

**डोंगरगांव ( नांदगांव टाइम्स )।** शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला जारवाही में 10 मार्च को कक्षा आठवीं वाले बच्चों का विदाई कार्यक्रम आयोजित किया गया इस अवसर पर नव निर्वाचित पंचायत प्रतिनिधियों एवं शाला प्रबंधन समिति पदाधिकारी गण और मध्यान्ह भोजन और रसोइया व समितियों की सहायता से प्रधान पाठक द्वारा न्योता भोजन कराया गया बच्चों द्वारा मनमोहक प्रस्तुति सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए इस अवसर पर सरपंच सुनीता भुवाल पटेल उप सरपंच श्रीराम कंवर हाईस्कूल बच्चे भी शामिल हुए प्राचार्य विजय मेश्राम और प्राथमिक शाला के प्रधान पाठक वीरेन्द्र वैष्णव सहित ग्रामवासी उपस्थित थे।

## जल संरक्षण के कार्यों को प्राथमिकता से करें : कलेक्टर

### विद्यालय भवनों के निर्माण एवं मरम्मत के कार्यों को समय-सीमा में पूरा करने के निर्देश, राजस्व समस्याओं के निदान के लिए आयोजित होंगे राजस्व शिविर

**राजनांदगांव ( नांदगांव टाइम्स )।** कलेक्टर श्री संजय अग्रवाल ने आज कलेक्टोरेट सभाकक्ष में साप्ताहिक समय सीमा की बैठक ली। कलेक्टर श्री संजय अग्रवाल ने कहा कि जिले में भू-जल स्तर में गिरावट आ रही है। ग्रीष्म ऋतु को देखते हुए जल संरक्षण के कार्यों को विशेष रूप से प्राथमिकता के तौर पर किया जाना है। इसके लिए जल अधोसंरचना के निर्माण के कार्यों को पूर्ण कराने तथा नये प्रस्तावों की सूची ग्राम पंचायतों को उपलब्ध कराएं। इसके साथ ही भू-जल स्तर को बढ़ाने के लिए परकोलेशन एवं वाटर रिचार्ज पर कार्य करने की आवश्यकता है। उन्होंने यह भी कहा कि नगरीय एवं जनपद पंचायत क्षेत्रों में रेन हार्वेस्टिंग के कारकों पर विशेष ध्यान दें, ताकि भू-जल स्तर को गिरने से रोका जा सके। कलेक्टर श्री संजय अग्रवाल ने कहा कि नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों के किसी भी वार्ड में पेयजल से संबंधित समस्या आने पर सभी सीएमओ, जनपद पंचायतों के सीईओ एवं लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के अधिकारी आपसी समन्वय बनाकर समस्या का निदान सुनिश्चित करें। हैण्ड पंप के खराब होने पर तत्काल मरम्मत कराएं। साप्ताहिक समय-सीमा की बैठक में कलेक्टर ने कहा कि सभी विभाग वर्तमान वित्तीय वर्ष के लिए निर्धारित सभी कार्यों को समय-सीमा में पूर्ण कराएं। नये वित्तीय वर्ष के लक्ष्यों को छोटे-छोटे लक्ष्यों में विभक्त कर समय पर पूरा किए जाएं। इन सभी कार्यों में पूर्ण पारदर्शिता अपेक्षित है। इसके अलावा जनप्रतिनिधियों के जनहितैषी प्रस्तावों एवं कार्यों को भी अपनी कार्य योजनाओं में शामिल करें। उन्होंने कहा कि जिले में संबंधित विभाग विशेष रूप से वन, उद्यानिकी, कृषि, कृषि विज्ञान केन्द्र, उद्यानिकी महाविद्यालय सहित अन्य विभाग पौधरोपण के लिए प्रस्ताव एवं कार्य योजना बनाकर अभी से तैयारी कर लें। जिले में जनसामान्य को आने वाली समस्याओं के निदान के लिए राजस्व अधिकारियों को राजस्व शिविर आयोजित करने के निर्देश दिए गए। साथ ही कलेक्टर श्री अग्रवाल ने जिले में अप्रैल से आयोजित होने वाले जिला स्तरीय जनसमस्या निवारण शिविरों के स्थान एवं समय सूची तैयार करने कहा। कलेक्टर ने कहा कि राज्य शासन द्वारा विभिन्न विभागों के माध्यम से अनेक जनकल्याणकारी योजनाओं का संचालन कर पात्र हितग्राहियों को लाभान्वित किया जा रहा है। उनमें से कई ऐसी योजनाएं है,जिनमें लक्ष्य के विरूद्ध अधिकांश लक्ष्य प्राप्त कर लिए गए हैं, इस संबंध में उन्होंने विभागों से अधिकारियों से शत-प्रतिशत लक्ष्य सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने यह भी कहा कि वनांचल क्षेत्रों में जिन्हें वन अधिकार पट्टा प्रदाय किया गया है, उन्हें शासन की उन समस्त योजनाओं से लाभान्वित करने के प्रयास किए जाएं, जिनके लिए वे पात्र हैं। कलेक्टर ने कहा कि निर्माण एजेंसियों द्वारा जिले के विद्यालयों के मरम्मत के साथ नये कक्ष के निर्माण भी किए जा रहे है,

# स्वच्छता सर्वेक्षण 2024 के लिये आगामी दिनों में सर्वेक्षण टीम आने की संभावना

## आयुक्त ने बैठक लेकर उप अभियंताओं से शौचालय मरम्मत कार्य शीघ्र पूर्ण करने, एसएलआरएम सेन्टरों में पीठ निर्माण में प्र्गति लाने तथा व्यवस्था दुरूस्त करने के दिए निर्देश

**राजनांदगांव (नांदगांव टाइम्स)।** स्वच्छता सर्वेक्षण वर्ष 2024 के लिये राजनांदगांव में स्वच्छता की टीम आने को ध्यान में रखकर आज निगम सभागृह में आयुक्त श्री अतुल विश्वकर्मा ने उप अभियंताओं एवं स्वास्थ्य विभाग के वार्ड प्रभारी व सफाई दरोगा तथा एसएलआरएम सेन्टर प्रभारियों की बैठक लेकर शौचालय मरम्मत कार्य जल्द पूर्ण करने तथा एसएलआरएम सेन्टरों में पीठ निर्माण कार्य में प्रगति लाकर पूर्ण करने उप अभियंताओं से कहा, वही वार्डो में साफसफाई में और सुधार लाकर नागरिकों को स्वच्छता से जोड गिला सुखा कचरा अलग अलग देने, उनसे फिडबैक लेने वार्ड प्रभारी व सफाई दरोगा को निर्देशित किये।

आयुक्त श्री विश्वकर्मा ने बैठक में उप अभियंताओं से उनके प्रभारित वार्डो में चल रहे शौचालय मरम्मत कार्य के प्रगति की जानकारी ली। उप अभियंताओं ने जानकारी दी कि कुछ शौचालय मरम्मत का कार्य अंतिम चरण में है, कुछ में एसीपी सीट लगाने का कार्य चल रहा है, कुछ मे रंग रोगन किया जा रहा है। आयुक्त ने कहा कि दरवाजा लगाने के अलावा अन्य सभी कार्य इस सप्ताह पूर्ण करे। प्राथमिकता तय कर शौचालय मरम्मत जल्द से जल्द पूर्ण कराने के निर्देश दिये। उन्होंने सहायक अभियंताओ से निरीक्षणकर पूर्ण होने वाले शौचालयों को सूचिबद्ध कर फोटो भेजने कहा। उन्होंने कहा कि स्वच्छता सर्वेक्षण के माप दण्ड के अनुसार शौचालयो में आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराये। इसके अलावा उन्होंने एसएलआरएम सेन्टर में पीठ निर्माण की प्र्गति की जानकारी ली और कहा कि पीठ निर्माण कार्य जल्द से जल्द पूर्ण करे। सेन्टरो में आवश्यकता अनुसार अन्य कार्य कराकर रंगरोगन, सूची लेखन के अलावा अन्य आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराये। उन्होंने कहा कि बाजार और व्यवसायिक क्षेत्रों में गिला व सुखा



कचरा के लिये अलग अलग डस्टबिन लगावे। स्कूलो के शौचालयों का निरीक्षण कर मरम्मत आदि करावें, संबंधितो को व्यवस्था दुरूस्त करने समझाई देवे। कार्यपालन अभियंता श्री दीपक खाण्डे ने कहा कि स्वच्छता सर्वेक्षण के माप दण्ड अनुसार शौचालयो व एसएलआरएम सेन्टरों में सामग्री उपलब्ध कराना है, एकजास्ट फैन,सेनेटरी मशीन, डस्टबिन, आयना, हैण्ड वास, पेपर नेपकीन, बाल्टी, मग आदि की व्यवस्था करनी है। इसके अलावा शौचालय का नाम तथा महिला, पुरूष, बच्चे विकलांग व वासबेसिंन का स्पष्ट उल्लेख करना है। सेप्टीक टैंक के पास के सोकपीठ ठीक करे, एसएलआरएम सेन्टरो में डस्टबिन के अलावा अन्य सामग्री उपलब्ध करावे। आयुक्त श्री विश्वकर्मा ने एसएलआरएम सेन्टर प्रभारियों से कहा कि सेन्टर में साफ सफाई के अलावा सभी व्यवस्था दुरूस्त रखे, गिला सुखा कचरा पृथकरकरण कार्य में तेजी लावे, कचरा जमा न होने दे, पीठ में खाद बनाने की प्रक्रिया का सुचारू संपादन करे। सभी स्वच्छता दीदीया घर में ही गिला सुखा कचरा अलग करने नागरिकों को समझाईस देवे,उन्हे स्वच्छता से जोडे,उनसे स्वच्छता के लिये फिडबेक लेवे। उन्होंने वार्ड प्रभारियों व सुपरवाईजरो से कहा कि वार्ड के मुक्कड को साफ रखे, कचरा तुरंत उठाये, सडकों व गलियो की नियमित सफाई करे, नाली नालो को साफ कर कचरा उठावे। रिक्त भूमि में कचरा न डालने देवे, लोगो को समझाईस देवे, झिल्ली पन्नी बिखरने न दे, डिवाईडर के किनारे से कचरा उठाये, सभी कर्मचारी प्रतिदिन उपस्थित रहे। अनावश्यक अवकाश पर कोई भी कर्मचारी नही रहेगे। उन्होंने कहा कि जैसे परीक्षा के दिनों में हम अधिक समय तक पढाई करते है उसी प्रकार सभी कर्मचारी निर्धारित समय के अलावा अन्य समय में तालाबो, सार्वजनिक स्थानों आदि की साफसफाई करे।

# अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस वर्ष में एक दिन नहीं 365 दिन होता है - डॉ. अनिता महिश्वर

**राजनांदगांव (नांदगांव टाइम्स)।** शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. सुचित्रा गुप्ता के मार्गदर्शन एवं विभागाध्यक्ष डॉ. अनीता शंकर के नेतृत्व में अंग्रेजी विभाग में लिटररी एसोसिएशन के बैनर तले दिनांक 11 मार्च 2025 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया गया। लिटरेरी एसोसिएशन के पदाधिकारियों एवं सदस्यों द्वारा अंग्रेजी साहित्य की महान लेखिकाओं एवं अंग्रेजी साहित्य में विख्यात महिला चरित्रों को पावर प्वाइंट प्रस्तुति के माध्यम से संक्षेप में प्रस्तुत किया। उपरोक्त अवसर पर विद्यार्थियों द्वारा महिला सशक्तिकरण एवं समाज एवं परिवार में महिलाओं की भूमिका पर स्वलिखित कविताओं की भी प्रस्तुतियां की गई। महिला सशक्तिकरण पर एक नृत्य की प्रस्तुति भी अंग्रेजी विभाग के विद्यार्थियों के द्वारा की गई। वरिष्ठ प्राध्यापिका डॉ. अनिता महिश्वर ने अपने उद्बोधन में कहा कि वे वर्ष में एक दिन महिला दिवस मनाने की पक्षधर नहीं है, अपितु वे यह मानती हैं कि पूरे वर्ष में 365 दिन महिलाओं को समर्पित हैं। वर्तमान समय में महिलाएं समाज के विभिन्न वर्गों से सामने आकर विभिन्न क्षेत्रों में अपनी सेवाएं दे रही हैं और समाज एवं देश की उन्नति में अपना योगदान सिद्ध कर रही हैं। ऐसा कोई क्षेत्र वर्तमान समय में नहीं है जो महिलाओं की पहुंच से दूर हो राष्ट्रपति, वित्त मंत्री, राज्यपाल या फिर एस्ट्रोनॉट, लेखिका, खेलकूद के क्षेत्र में, इंजीनियरिंग में, पायलट या अन्य कोई भी क्षेत्र महिलाएं कहीं भी पुरुषों से कमतर साबित नहीं हो रही हैं। डॉ. अनीता शंकर ने विद्यार्थियों को इतने अच्छे कार्यक्रम के आयोजन हेतु शुभकामनाएं दी। डॉ नीलू श्रीवास्तव ने विद्यार्थियों को इतने कम समय में इतने अच्छे आयोजन हेतु शुभकामनाएं देते हुए उनकी स्वलिखित कविताओं के वाचन हेतु भी उनकी प्रशंसा की। कार्यक्रम में अंग्रेजी विभाग से सुश्री मंजरी सिंह, डॉक्टर अनीता साहा, डॉ आराधना गोस्वामी एवं श्रीमती मंजुला सोनी भी उपस्थित रहे। अंत में के कटिंग कर इस कार्यक्रम का समापन हुआ।




## आयुष ग्राम बेलरगोंदी में त्रैमासिक स्वास्थ्य शिविर का हुआ आयोजन

**राजनांदगांव (नांदगांव टाइम्स)।** संचालनालय आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध एवं होम्योपैथी (आयुष) छत्तीसगढ़ रायपुर के निर्देशन एवं ज़िला आयुष अधिकारी डॉ शिल्पा मिश्रा राजनांदगाँव के कुशल मार्गदर्शन में एकदिवसीय नि:शुल्क मासिक स्वास्थ्य स्वास्थ्य एवं जन जागरूकता चिकित्सा शिविर आयुष ग्राम शासकीय आयुर्वेद औषधालय बेलरगोंदी में दिनांक 11/03/2025 को आयोजन किया गया । शिविर का शुभारंभ ग्राम के सरपंच सोनम मरावी , श्री विष्णु साहू, श्री जीवनलाल साहू,श्री अमर सिंह, श्री धीरपाल कंवर, श्री कमलेश मरावी, श्रीमती तुलसा बाई (स्व सहायता समूह), श्रीमती जानकी बाई मितानीन, श्रीमती उमाबाई मितानीन श्रीमती पुनिया बाई, कुंती बाई ,श्रीमती साब्दिया बाई, विरेन्द्र सोनी, शिविर प्रभारी डॉ अनिरुद्ध कुमार पटेल, स्टाफ एवं गणमान्य नागरिकों के द्वारा भगवान धन्वंतरि की पूजा अर्चना कर किया गया। इस शिविर में 219 मरीजों का परीक्षण कर नि:शुल्क औषधि प्रदान किया गया लाभान्वित हुए । इस शिविर में शिविर प्रभारी डॉ अनिरुद्ध कुमार पटेल (नोडल अधिकारी दुर्ग संभाग) , डॉ प्राजंलि शुक्ला, डॉ रेखा साहू,श्री देवदास साहू , श्री दीपक , श्री शंकर लाल कंवर, योग प्रशिक्षक श्री छगन राम वर्मा , श्री खिलेश नेताम ( लैब टेक्नीशियन), इत्यादि ने अपनी सेवाए दी ।

## पात्र परिवारों को प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण का लाभ दिलाने किया जा रहा सर्वे

**राजनांदगांव।** भारत सरकार के निर्देशानुसार प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण अंतर्गत जिले के छूटे हुए पात्र परिवारों को योजना से लाभान्वित करने के लिए सूची तैयार की गई थी। सूची को नये मापदण्ड के आधार पर पात्र परिवारों को आवास प्लस सूची में शामिल करने के लिए प्रगणकों द्वारा सर्वे किया जा रहा है। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत सुश्री सुरूचि सिंह ने बताया कि प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण अंतर्गत पात्र परिवारों को आवास प्लस सूची में शामिल करने के लिए ग्राम पंचायत के सचिव, रोजगार सहायक एवं आवास मित्र को ग्राम पंचायत में सर्वे करने हेतु प्रगणक बनाया गया है। प्रगणकों द्वारा आवास एप के माध्यम से सर्वेक्षण किया जा रहा है। योजनांतर्गत किसी भी पात्र परिवार का नाम छूट जाने पर पात्र हितग्राही ग्राम पंचायत के सचिव से संपर्क कर सकते है। पात्र हितग्राही आवास प्लस वेबसाईट पर स्वयं आवश्यक जानकारी अपलोड कर सकते है। किसी भी प्रकार के तकनीकी समस्या के समाधान के लिए संबंधित जनपद एवं ग्राम पंचायत के सचिव, आवास मित्र, रोजगार सहायक से संपर्क कर सकते है।



**शुभांक**

**1-2-6**

**125-8 469-9**

**भाग्यांक**

**400-4 468-8**

# जनपद अध्यक्ष प्रतिमा पप्पू चंद्राकर ने किया राजनांदगांव जनपद में पदभार ग्रहण

**राजनांदगांव (नांदगांव टाइम्स)।** त्रिस्तरीय पंचायती राज चुनाव के बाद आज राजनांदगांव जनपद पंचायत में अध्यक्ष श्रीमती प्रतिमा पप्पू चंद्राकर व उपाध्यक्ष अनीता सिन्हा सहित 23 सदस्यों ने पदभार ग्रहण किया । इस अवसर पर मुख्यरूप से कोमल सिंह राजपूत जिला अध्यक्ष भाजपा मौजूद रहे । कार्यक्रम की शुरुवात उपस्थित अतिथियों ने छत्तीसगढ़ महतारी के तैल चित्र पर पुष्प अर्पित कर कर किया गया । पश्चात राजकीय गीत अरपा पैरी के धार के साथ कार्यक्रम की शुरुवात किया गया,नवनिर्वाचित अध्यक्ष/उपाध्यक्ष ,सद्स्यों का फूल माला से स्वागत किया गया,मुख्यकार्यपालन अधिकारी ने पदभार ग्रहण करवाया । प्रथम सम्मेलन को अध्यक्ष और उपाध्यक्ष ने भी संबोधित किया,इस कार्यक्रम के मुख्य साक्षी के रूप कोमल सिंह राजपूत ने उपस्थित जनों को संबोधित करते हुए कहा कि आज सभी चुनावों में जीत हासिल किये वो कार्यकर्ताओं की देन, पंच,सरपंच,जनपद,जिला में सभी जगह हमारे लोग है,काम करने में कोई दिक्कत नहीं होगा। जनपद अध्यक्ष श्रीमती प्रतिमा पप्पू चंद्राकर ने भाजपा के शीर्ष नेतृत्व वरिष्ठ नेताओं का आभार प्रकट किया उन्होंने आगे कहा कि जनता की सेवा और क्षेत्र के विकास के लिए समर्पित रहुँगी, मैं आप सभी को विश्वास दिलाती हूं कि क्षेत्र की सर्वांगीण विकास और जनता की सेवा के लिए पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ कार्य करती रहूंगी जनपद पंचायत प्रथम सम्मेलन में भाजपा जिला अध्यक्ष श्री कोमल सिंह राजपूत जी, विवेक साहू सांसद प्रतिनिधि, पूर्व मंडल अध्यक्ष, जिला उपाध्यक्ष लीलाधर साहू,मंडलअध्यक्ष मनोज साहू, मंडल अध्यक्ष खिलेश्वर साहू ,पूर्वमंडल अध्यक्ष महेश यादव, जागेश्वर साहू , तिलई मंडल अध्यक्ष परदेसी राम सोनबोइर, इरई कला मंडल अध्यक्ष, पूर्व महामंत्री कृष्णा तिवारी, ग्रामीण मंडल के मंत्री पप्पू चंद्राकर सहित नवनिर्वाचित जनपद सदस्य गण मौजूद रहे।

# शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगांव में JRF/NET/SET पर कार्यशाला का समापन



**राजनांदगांव (नांदगांव टाइम्स)।** आज दिनांक 8/3/2025 दिन शनिवार को शास. दिग्विजय महाविद्यालय राजनांदगांव में प्राचार्य डॉ. सुचित्रा गुप्ता के निर्देशन व राजनीति विज्ञान विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. अमिता बक्शी के मार्गदर्शन में राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा छ्वक्रस्न/हृश्वञ्ज/स्श्वञ्ज पर दो दिवसीय कार्यशाला का समापन किया गया। राजनीति विज्ञान के छात्रों हेतु आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला का आज दूसरा दिन था जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में महाविद्यालय के ही भूतपूर्व छात्र जिन्होंने स्वयं छ्वक्रस्न/हृश्वञ्ज की परीक्षा उत्तीर्ण की है उन्हें आमंत्रित किया। दो दिवसीय कार्यशाला के अंतिम दिवस पर वक्ता समीर भारती तथा सुरेखा सोरी तथा गीतांजलि साहू द्वारा द्वितीय प्रश्न पत्र राजनीति विज्ञान की तैयारी हेतु अपनी रणनीति साझा करते हुए संपूर्ण जानकारी प्रदान की गई। कार्यक्रम में राजनीति विज्ञान की विभागाध्यक्ष डॉ. अमिता बक्शी द्वारा वक्ताओं को उनके योगदान के लिए प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। विभाग के डॉ. राजकुमार बंजारे, श्री संजय सप्तर्षि, डॉ. भारती सोनी तथा श्री दीपक आदि प्राध्यापकों ने छात्रों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए कार्यक्रम को संपन्न करवाया।

## अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर ओड़िसा सरकार ने ग्राम खैरझिटी की श्रीमती दमयंती सोनी को किया सम्मानित

**राजनांदगांव (नांदगांव टाइम्स)।** अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर ओडिसा सरकार ने राजनांदगांव जिले की ग्राम खैरझिटी की श्रीमती दमयंती सोनी को सम्मानित किया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की मंशानुसार ओडिसा में आयोजित माईनिंग एक्सपो कार्यक्रम में श्रीमती दमयंती सोनी शामिल हुई। श्रीमती दमयंती सोनी ने जेसीबी मशीन एवं अन्य भारी मशीनों को चलाकर अपने अदम्य साहस का परिचय दिया। छत्तीसगढ़ की एकमात्र ऑपरेटर होने के कारण माईनिंग कंपनीयों ने सम्मानित किया। उल्लेखनीय है कि श्रीमती दमयंती सोनी दिसम्बर माह में ग्रेटर नोएडा और जनवरी में चले भारत मोबिलीटी एक्सपो दिल्ली एनसीआर में भी बड़ी मशीनों को चलाकर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। वह एक उम्रदराज महिला होने के बाद भी अपनी मेहनत और हिम्मत का परिचय देकर अपने छत्तीसगढ़ का नाम रोशन करती रहेगी।

## पुखराज साहू (पप्पू) बने उप सरपंच

**डोंगरगढ़ (नांदगांव टाइम्स)।** विकासखंड के ग्राम अछोली में विगत 8 मार्च को पीठासिल अधिकारी डोंगरगढ़, सचिन पूर्णिमा मांडवी, पंचगणों की उपस्थिति में उपसरपंच का चुनाव संपन्न हुआ, जिसमें दो अभ्यर्थि भागचंद वर्मा एवं पुखराज साहू ने उपसरपंच के लिए दावेदारी पेश की, 18 पंच एवं 1 सरपंच कुल मिलाकर 19 मत पड़े जिसमें से पुखराज साहू को तेरा मत एवं भागचंद वर्मा को 6 मत मिले, जिसमें कांग्रेस समर्थित प्रत्याशी पुखराज साहू (पप्पू) 13 मतों के साथ बने उप सरपंच निर्वाचित हुए। उपसरपंच बनने पर नवनिर्वाचित सरपंच नंदकुमार साहू, पंच मूलचंद साहू,खेमचंद सहारे,सुप्रिया रानी जितेंद्र गुप्ता,खिलेश्वरी साहू,मुन्ना यादव ,ज्योति नेताम,पारख साहू, सुनीता साहू,पूर्णिमा साहू,भंवर सिंग,सूर्या मानिकपुरी,भागचंद वर्मा,खुशबु साहू, ईश्वरी साहू,मोहनीश साहू,वंदना यूईके ,जीना सड़ेकर, उपकार दास साहू रेखराज वर्मा, चुम्मन दास साहू फिरंगी राम पटेल योधन दास साहू आदि बधाई देते हुए गांव के विकास में हर संभव प्रयास करने की बात कही है।




**कार्यालय पशु चिकित्सा सहायक शल्यज्ञ शासकीय बकरी पालन प्रक्षेत्र रामपुर**

**जिला-कबीरधाम छ.ग.**

क्र./2017./ब. पा. प्र. / नीलामी सूचना / 2024-25 / रामपुर, दिनांक 7/3/2025

**÷बकरे / बकरियाँ नीलामी सूचना÷**

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि शासकीय बकरी पालन प्रक्षेत्र रामपुर विकासखण्ड सहसपुर लोहारा जिला कबीरधाम में दिनांक 21.03.2025, दिन शुकवार सुबह 10 बजे से निम्नानुसार छटनीकृत बकरे / बकरियो की नीलामी की जावेगी समस्त इच्छुक व्यक्ति उक्त तिथि में शासकीय बकरी पालन प्रक्षेत्र रामपुर विकासखण्ड सहसपुर लोहारा जिला कबीरधाम में उपस्थित होकर बोली लगाकर पशु कय हेतु आमंत्रित है।

| पशु नस्ल | बकरी | बकरा | मेमना | कुल | रिमार्क |
|---|---|---|---|---|---|
| सिरोही | 39 | 3 | - | 42 | |

**शर्ते :-** नीलामी में बोली लगाने हेतु प्रति व्यक्ति राशि रू. 3000/- की धरोहर राशि नगद जो नीलामी पश्चात वापसी योग्य है' जमा करना आवश्यक होगा। प्रत्येक पशु की बोली पृथक पृथक होगी अंतिम सफल बोली लगाने वाले व्यक्ति, बोली की आधी राशि तत्काल जमा करेंगें एवं 24 घण्टे के भीतर पूर्ण राशि जमा कर पशु ले जाने हेतु बाध्य होंगे अन्यथा जमा राशि राजसात कर द्वितीय अधिकतम बोली को मान्य की जावेगी। पूर्ण राशि जमा किये जाने पश्चात पशु न ले जाने पर किसी भी प्रकार की हानि की जिम्मेदारी कयकर्ता की होगी एवं प्रतिदिन आहार इत्यादि का व्यय का भुगतान भी उन्हे वहन करना होगा।

**पशु चिकित्सा सहायक शल्यज्ञ**
**शासकीय बकरी पालन प्रक्षेत्र रामपुर**
**जिला-कबीरधाम छ.ग.**

जी- 242505870/3



**नाम परिवर्तन**

मैं विवेक कुमार साहू पिता श्री विपला दास साहू निवासी ग्राम झींका, तहसील-डोंगरगांव, जिला-राजनांदगांव (छ.ग.) का हूँ।

मेरी पुत्री का नाम याचना साहू है, परन्तु कुछ दस्तावेजो में यशस्वी दर्ज है। जिसे सुधार कर सभी दस्तावेजों में याचना साहू दर्ज किया जावे।

**विवेक कुमार साहू**
**पिता श्री विपला दास साहू**
**ग्राम झींका,**
**तहसील-डोंगरगांव,**
**जिला-राजनांदगांव (छ.ग.)**

**नाम परिवर्तन**

यह है मैं लेखा यदु पति अतुल यदु निवासी वार्ड नं.11 स्टेशनपारा राजनांदगांव , छत्तीसगढ़ की हूँ। यह है कि मेरा विवाह पूर्व नाम लेखा यादव था और विवाह पश्चात मेरा नाम लेखा यदु हो गया है। लेखा यादव और लेखा यदु दोनों नाम एक ही महिला का नाम है।

अतः भविष्य में मुझे लेखा यदु पति अतुल यदु के नाम से जाना पहचाना व लिखा जाए।

**लेखा यदु**
**पति अतुल यदु**
**वार्ड नं.11 स्टेशनपारा**
**राजनांदगांव (छ. ग.)**

**न्यायालय नजूल अधिकारी जिला खैरागढ़-छुईखदान-गण्डई (छ0ग0)**

// उद्घोषणा//

रा.प्र.क्र.202503291500003
शीर्ष- अ- 6 वर्ष 2023-24
क्र./1271/वा. नजूल / 2025
खैरागढ़, दिनांक 10/03/2025

एतद द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है आवेदिका श्रीमती भारती जैन पति आशीष जैन निवासी तुरकारीपारा खैरागढ़ जिला के0सी0जी0 द्वारा नगर खैरागढ मोहल्ला गोल बाजार ब्लॉक नं. 06, स्थित भूखण्ड क्रमांक 466/2 एवं 166/2 रकबा क्रमशः 660 वर्गफुट एवं 600 वर्गफुट भूमि उनके पति आशीष जैन आ0 मांगीलाल जैन के संयुक्त नाम पर दर्ज है। खातेदार की मृत्यु दिनांक 31.12.2024 को हो जाने के कारण उक्त वादभूमि पर उनका नाम विलोपित कर उनके विधिक वारिसानों के नाम पर फौती नामांतरण किए जाने आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अतएव उपरोक्तानुसार वाद भूमि संबंधी रिकार्ड पर मृतक के विधिक वारिसान का नाम पर नामांतरण किये जाने में जिस किसी व्यक्ति / संस्था को आपत्ति हो तो अपना आपत्ति/आक्षेप इश्तहार प्रकाशन तिथि के 15 दिनों के भीतर स्वयं अथवा अपने अभिभाषक के माध्यम से इस न्यायालय में उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित अवधि के पश्चात प्राप्त होने वाले आपत्तियों पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 10/03/2025 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय पदमुद्रा से जारी किया गया।

सील — **नजूल अधिकारी खैरागढ़-छुईखदान-गण्डई**

**न्यायालय नजूल जाँच अधिकारी, राजनांदगाँव (छ0ग0)**

राजस्व मामला क्रमांक 202503093700012
अ-6 वर्ष 2024-25

: : ईश्तहार : :

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक कृष्णा आ. स्व. मोतीलाल, निवासी-सतनामी पारा, राजनांदगांव तहसील व जिला-राजनांदगांव के द्वारा राजनांदगाँव मोहल्ला नंदई स्थत शीट क्रमांक 49 डी, भूखण्ड क्रमांक 139/4, क्षेत्रफल 42.75 वर्गमीटर जो धारकगण रामप्रसाद, रामदास, कन्हैया, कृष्णा, बंशीराम सभी आ. स्व. मोतीलाल, शेखर, श्यामचरण, सुशीला आ. स्व. प्रेमलाल, आकाश, निशा पिता नरेशराम, निवासी-सतनामीपारा नंदई रोड़, राजनांदगाँव के नाम पर नजूल अभिलेख में दर्ज है। उक्त भूखण्ड के सहधारक शेखर आ. स्व. प्रेमलाल की मृत्यु होने से उनका नाम विलोपित कर शेष सहधारकगण का नाम यथावत रखे जाने हेतु इस न्यायालय में आवेदन पेश किया गया है।

अतः उक्त भूमि / मकान / संपत्ति के नामांतरण के संबंध में जिस किसी व्यक्ति / संस्था जो इस भूखण्ड पर हित रखते है, पेशी तारीख 21.03.2025 को स्वयं या अपने अधिवक्ता के माध्यम से उपस्थित होकर आपत्ति पेश कर सकते है। बाद में प्रस्तुत आपत्ति पर कोई सुनवाई नहीं होगी।

यह उद्घोषणा आज दिनांक 06.03.2025 को मेरे हस्ताक्षर एवं पद मुद्रा से जारी किया गया।

सील — **नजूल अधिकारी नजूल जाँच, राजनांदगांव**

**न्यायालय नजूल जाँच अधिकारी, राजनांदगाँव (छ0ग0)**

राजस्व मामला क्रमांक 202503093700023
अ-6 वर्ष 2024-25

- : : ईश्तहार : : -

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक जितेन्द्र कुमार सिन्हा आ. स्व. अजय कुमार सिन्हा, निवासी-जयस्तंभ चौक, तहसील व जिला-राजनांदगाँव के द्वारा राजनांदगाँव मोहल्ला कलारपारा स्थित शीट क्रमांक 48 ए, भूखण्ड क्रमांक 25/1, क्षेत्रफल 36.00 वर्गमीटर जो धारकगण कोदूराम आ. माहंगू, अजय कुमार आ. माहंगू सिन्हा, निवासी-कलारपारा, राजनांदगाँव के नाम पर नजूल अभिलेख में दर्ज है। भूखण्ड के सहधारक अजय कुमार आ. माहंगू सिन्हा की मृत्यु उपरांत उनके स्थान पर वारिसों का नाम दर्ज किये जाने एवं शेष सहधारक का नाम यथावत रखे जाने हेतु इस न्यायालय में आवेदन पेश किया गया है।

अतः उक्त भूमि/मकान / संपत्ति के नामांतरण के संबंध में जिस किसी व्यक्ति / संस्था जो इस भूखण्ड पर हित रखते है, पेशी तारीख 26.03.2025 को स्वयं या अपने अधिवक्ता के माध्यम से उपस्थित होकर आपत्ति पेश कर सकते है। बाद में प्रस्तुत आपत्ति पर कोई सुनवाई नहीं होगी।

यह उद्घोषणा आज दिनांक 11.03.2025 को मेरे हस्ताक्षर एवं पद मुद्रा से जारी किया गया।

सील — **नजूल अधिकारी नजूल जाँच, राजनांदगांव**

**न्यायालय नजूल जाँच अधिकारी, राजनांदगाँव (छ0ग0)**

राजस्व मामला क्रमांक 202503093700022
अ-6 वर्ष 2024-25

: : ईश्तहार : : -

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक जितेन्द्र कुमार सिन्हा आ. स्व. अजय कुमार सिन्हा, निवासी-जयस्तंभ चौक, तहसील व जिला-राजनांदगाँव के द्वारा राजनांदगाँव मोहल्ला कलारपारा स्थित शीट क्रमांक 48 ए, भूखण्ड क्रमांक 2/3, क्षेत्रफल 26.00 वर्गमीटर जो धारकगण कोदूराम, अजय कुमार, फिराबाई आ. महंगू कलार निवासी कलारपारा, राजनांदगाँव के नाम पर नजूल अभिलेख में दर्ज है। भूखण्ड के सहधारक अजय कुमार आ. महंगू सिन्हा की मृत्यु उपरांत उनके स्थान पर वारिसों का नाम दर्ज किये जाने एवं शेष सहधारकगण का नाम यथावत रखे जाने हेतु इस न्यायालय में आवेदन पेश किया गया है।

अतः उक्त भूमि / मकान / संपत्ति के नामांतरण के संबंध में जिस किसी व्यक्ति / संस्था जो इस भूखण्ड पर हित रखते है, पेशी तारीख 26.03.2025 को स्वयं या अपने अधिवक्ता के माध्यम से उपस्थित होकर आपत्ति पेश कर सकते है। बाद में प्रस्तुत आपत्ति पर कोई सुनवाई नहीं होगी।

यह उद्घोषणा आज दिनांक 11.03.2025 को मेरे हस्ताक्षर एवं पद मुद्रा से जारी किया गया।

सील — **नजूल अधिकारी नजूल जाँच, राजनांदगांव**

**न्यायालय न्यायालय नजूल अधिकारी जिला खैरागढ़-छुईखदान-गण्डई (छ0ग0)**

//उद्घोषणा//

रा.प्र.क्र.- 202503291500001
शीर्ष अ-6 वर्ष 2023-24
क्रमांक/1266/वा. नजूल / 2025
खैरागढ़, दिनांक 10/03/2025

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है आवेदक चेतन निषाद आ0 जागेशर निषाद निवासी वार्ड क्रमांक-01 पिपरिया तहसील-खैरागढ़ जिला के0सी0जी0 द्वारा नगर खैरागढ़ मोहल्ला सिविल लाईन, ब्लाक नं. 01, स्थित भूखण्ड क्रमांक 154 सम्मिलित भू-खण्ड कमांक 155 रकबा क्रमशः 33,270 वर्गफूट एवं 3250 वर्गफूट भूमि खातेदार चंदू आ0 लतेल केंवट के नाम पर दर्ज है। खातेदार की मृत्यु दिनांक 06.04.1982 को हो जाने के कारण उक्त वादभूमि संबंधी अभिलेख पर उनका नाम विलोपित कर उनके विधिक वारिसानों के नाम पर फौती नामांतरण किए जाने हेतु आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अतएव उपरोक्तानुसार वाद भूमि संबंधी रिकार्ड पर मृतक के विधिक वारिसानों के नाम पर नामांतरण किये जाने में जिस किसी व्यक्ति / संस्था को आपत्ति हो तो अपना आपत्ति / आक्षेप ईश्तहार प्रकाशन तिथि के 15 दिनों के भीतर स्वयं अथवा अपने अभिभाषक के माध्यम से इस न्यायालय में उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित अवधि के पश्चात प्राप्त होने वाले आपत्तियों पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 10-03-2025 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय पदमुद्रा से जारी किया गया ।

सील — **नजूल अधिकारी खैरागढ़-छुईखदान-गण्डई**

## ज्ञान मंथन

*1) बीच गेम्स 2024 कहाँ आयोजित किया गया?*

*2) भारत के कौन प्रधानमंत्री मांडा के 41 वें राजा बहादुर थे?*

*3) 12 जनवरी 2024 को जापानी सरकार द्वारा लॉन्च किए गए सूचना संग्रह उपग्रह का क्या नाम है?*

*4) विश्व का पहला समाचार पत्र किसने प्रकाशित किया?*

*5) किसने भारत की पहली मौखिक गर्भनिरोधक गोली सहेली की खोज की थी?*

**RamaQuiz (Pappu Ganesh )**



## उत्तर माला

(1) दीव (2) विश्वनाथ प्रताप सिंह (3) ऑप्टिकल-8 (4) जौहान कैरोलस (5) डॉ. नित्या आनंद

# पर्यावरण संरक्षण के लिये गोबर आधारित प्राकृतिक रंगों से मनाये वैदिक होली

**अरविन्द तिवारी**

**नई दिल्ली (नांदगांव टाइम्स)।** ग्लोबल कन्फेडरेशन ऑफ काऊ बेस्ड इंडस्ट्रीज़ (जीसीसीआई) द्वारा वैदिक होली : पर्यावरण संरक्षण और स्वास्थ्य संवर्धन विषय पर एक महत्वपूर्ण वेबिनार का आयोजन किया गया। इस वेबिनार में विभिन्न राज्यों के गौ सेवा आयोगों के अध्यक्षों , पूर्व अध्यक्षों ने भाग लिया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य पारंपरिक भारतीय पद्धति के अनुसार पर्यावरण अनुकूल एवं स्वास्थ्यवर्धक होली उत्सव मनाने को प्रोत्साहित करना था। वेबिनार की शुरुआत जीसीसीआई के निदेशक मितल खेतानी द्वारा स्वागत प्रवचन से हुई , जिसमें उन्होंने सभी अतिथियों का हार्दिक अभिनंदन किया और वैदिक होली के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि यह वेबिनार केवल एक विचार-विमर्श मंच नहीं , बल्कि भारतीय परंपराओं को पुनर्जीवित करने और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में ठोस कदम उठाने का एक प्रयास है। उन्होंने सभी गौ सेवा आयोगों , गौशालाओं और पर्यावरण प्रेमियों से अपील की कि वे इस पवित्र अभियान को पूरे भारत में फैलाने में सहयोग करें। वेबिनार में अखिल भारतीय गौ सेवा गतिविधि के संयोजक अजीत प्रसाद महापात्रा ने कहा कि गाय हमारी सनातन संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है और गोमय (गोबर) से निर्मित होली मनाना केवल धार्मिक नहीं बल्कि वैज्ञानिक और पर्यावरणीय दृष्टि से भी लाभकारी है। उन्होंने बताया कि गोबर के कंडों से होलिका दहन करने से वायुमंडल शुद्ध होता है , ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ती है और कार्बन उत्सर्जन नियंत्रित रहता है। उन्होंने सभी राज्यों से आग्रह किया कि वे गो आधारित होली को बढ़ावा दें और अधिक से अधिक गोशालाओं में इसे लागू करें। इसी कड़ी में हरियाणा गौ सेवा आयोग के अध्यक्ष श्रवण कुमार गर्ग ने बताया कि हरियाणा में पिछले कुछ वर्षों से गोबर आधारित होलिका दहन को प्रोत्साहित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि गौशालाओं को इस अभियान से जोड़कर एक नई अर्थव्यवस्था खड़ी की जा सकती है। हरियाणा गौ सेवा आयोग इस बार राज्य में पांच सौ से अधिक स्थानों पर गो-काष्ठ के उपयोग से होलिका दहन सुनिश्चित कर रहा है। उन्होंने यह भी बताया कि हरियाणा में गौशालाओं को गोबर से बने उत्पादों की बिक्री हेतु सहायता प्रदान की जा रही है , जिससे गोशालायें आत्मनिर्भर बनें।

उत्तरप्रदेश गौ सेवा आयोग के अध्यक्ष श्याम बिहारी गुप्ता ने अपने वक्तव्य में बताया कि उत्तर प्रदेश सरकार ने इस वर्ष गौशालाओं में प्राकृतिक होली मनाने का निर्णय लिया है। उन्होंने बताया कि प्रदेश की सभी गौशालाओं में रासायनिक रंगों के बजाय गोबर आधारित प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया जायेगा। उन्होंने कहा कि गेंदे के फूलों , चुकंदर और अन्य प्राकृतिक स्त्रोतों से तैयार किये गये रंगों से होली खेली जायेगी , जिससे पर्यावरण को किसी भी प्रकार की हानि ना हो। छत्तीसगढ़ गौ सेवा आयोग के अध्यक्ष विशेषर सिंह पटेल ने बताया कि छत्तीसगढ़ में पारंपरिक रूप से पलाश के फूलों और गोबर से बनी लकड़ियों का उपयोग होलिका दहन में किया जाता है। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ गौ सेवा आयोग ने इस बार 103 गौशालाओं में गो-काष्ठ उत्पादन की योजना बनाई है , जिससे लोग आसानी से गौ आधारित सामग्री प्राप्त कर सकें। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि छत्तीसगढ़ सरकार गौशालाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिये गोबर खरीद योजना चला रही है , जिससे गौशालाओं की आर्थिक स्थिति मजबूत हो रही है। महाराष्ट्र गौ सेवा आयोग के अध्यक्ष शेखर मुंदडा ने बताया कि महाराष्ट्र सरकार ने गौ माता को च्राज्य माताज् का दर्जा दिया है , जिससे गौ आधारित उत्पादों को सरकारी मान्यता मिलने में आसानी हो रही है। उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र में दो सौ से अधिक गौशालाओं में गो-काष्ठ मशीनें लगाई जा चुकी हैं , जिससे होली और अन्य धार्मिक अनुष्ठानों में गोबर आधारित लकड़ियों का उपयोग किया जा सके। उन्होंने बताया कि महाराष्ट्र के कई क्षेत्रों में गोबर से च्धुली वंदनज् नामक होली उत्सव मनाया जाता है , जिसमें लोग रंगों के बजाय गोबर से स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करते हैं। उत्तराखंड गौ सेवा आयोग के अध्यक्ष पंडित राजेन्द्र अंथवाल ने बताया कि उत्तराखंड में बद्री गायों की नस्ल संरक्षण को लेकर सरकार सक्रिय रूप से कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि गौशालाओं को होली जैसे त्योहारों के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाया जाना चाहिये। उन्होंने बताया कि उत्तराखंड के गांवों में अब भी होलिका दहन के बाद उसकी राख को घरों में सुख-समृद्धि के लिये रखा जाता है , जो एक प्राचीन परंपरा है। पंजाब गौ सेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष सचिन शर्मा ने कहा कि गौ आधारित उत्पादों का प्रयोग केवल होली तक सीमित नहीं रहना चाहिये , बल्कि इसे पूरे वर्ष बढ़ावा देना चाहिये। उन्होंने बताया कि पंजाब में कई स्थानों पर गोबर आधारित ब्लॉक्स से शव दाह गृह बनाये जा रहे हैं , जिससे लकड़ी की खपत कम हो रही है। उन्होंने कहा कि होली के समय भी गोबर से बने उत्पादों को अधिकाधिक लोगों तक पहुंचाने का प्रयास किया जा रहा है। हिमाचल प्रदेश गौ सेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष अशोक शर्मा ने कहा कि हिमाचल प्रदेश की पारंपरिक होली पहले ही प्राकृतिक होती थी , जहां फूलों के रंगों का उपयोग किया जाता था। उन्होंने बताया कि गौशालाओं के माध्यम से इस परंपरा को फिर से पुनर्जीवित किया जा रहा है , जिससे स्थानीय लोगों को आर्थिक लाभ भी मिल सके। उन्होंने कहा कि हिमाचल सरकार इस बार गौशालाओं में प्राकृतिक होली मनाने के लिये एक विशेष योजना बना रही है। वहीं जीसीसीआई के संस्थापक एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ. वल्लभभाई कथीरिया ने अपने उद्बोधन में कहा कि वैदिक होली का उद्देश्य केवल एक पारंपरिक त्यौहार मनाना नहीं , बल्कि इसे पर्यावरण संरक्षण और गौसंवर्धन का माध्यम बनाना है। उन्होंने बताया कि गाय के पंचगव्य (गोबर , गोमूत्र , दूध , दही , घी) में से गोबर और गोमूत्र का उपयोग होली में किया जाये तो यह एक स्वस्थ, प्राकृतिक और पर्यावरण हितैषी उत्सव बन सकता है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि होली के दौरान रासायनिक रंगों के स्थान पर प्राकृतिक रंगों और गोबर से बने उत्पादों का उपयोग किया जाये। उन्होंने गौ सेवा आयोगों से अपील की कि होली पर गो-काष्ठ (गोबर से बनी लकड़ियों) के उपयोग को बढ़ावा दिया जाये , जिससे पेड़ों की कटाई रोकी जा सके और गोशालाओं की आर्थिक स्थिति भी मजबूत हो। उन्होंने कहा कि गो आधारित दीपक , अगरबत्ती , गुलाल और धूपबत्ती जैसी वस्तुयें भी होली उत्सव में प्रयोग की जानी चाहिये। डॉ. कथीरिया ने यह भी सुझाव दिया कि होली के बाद होलिका दहन की राख को खेतों में डालने से भूमि अधिक उपजाऊ होगी , जिससे प्राकृतिक खाद का निर्माण होगा और रासायनिक खादों की निर्भरता कम होगी। उन्होंने भारत में बरसाना की लट्ठमार होली , मथुरा-वृंदावन की फूलों की होली , पंजाब के आनंदपुर साहिब का होला मोहल्ला , महाराष्ट्र-मध्य प्रदेश की रंग पंचमी , मणिपुर की याओसांग होली , केरल की मंजल कुली , बिहार-झारखंड की फाल्गुन पूर्णिमा , पश्चिम बंगाल के शांतिनिकेतन का बसंत उत्सव और गोवा के शिगमो उत्सव जैसी विभिन्न परंपराओं का उल्लेख करते हुये कहा कि यदि इन सभी उत्सवों को गौ आधारित बना दिया जाये , तो यह भारत के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक उत्थान के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण में भी एक क्रांतिकारी पहल होगी। उन्होंने गौमय स्नान और गौ फाग की परंपराओं को पुनर्जीवित करने पर भी बल दिया , जिसमें गौमूत्र और गोबर से होली खेलने से जल प्रदूषण को रोका जा सकता है और त्वचा रोगों से भी बचाव संभव है। इसके साथ ही उन्होंने होली के अवसर पर भक्तिमय भजनों और शास्त्रीय संगीत के आयोजन की भी अपील की , जिससे समाज में सकारात्मक ऊर्जा का संचार हो और भारतीय संस्कृति को और अधिक सुदृढ़ किया जा सके। इस वेबिनार का संचालन जीसीसीआई के निदेशक पुरीष कुमार द्वारा किया गया , जिन्होंने अपने सहज एवं प्रभावी शैली में पूरे सत्र को सुव्यवस्थित रूप से आगे बढ़ाया। उन्होंने वक्ताओं को आमंत्रित करते हुये गौ आधारित होली के वैज्ञानिक , आध्यात्मिक और सामाजिक लाभों को रेखांकित किया और बताया कि यह अभियान सिर्फ गौसंवर्धन तक सीमित नहीं , बल्कि समाज और पर्यावरण के स्वास्थ्य से भी गहराई से जुड़ा हुआ है। कार्यक्रम में जीसीसीआई के निदेशक अमिताभ भटनागर ने सभी अतिथियों और वक्ताओं का आभार व्यक्त करते हुये कहा कि यह वेबिनार वैदिक होली को पुनर्जीवित करने की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल है। उन्होंने सभी राज्यों के गौ सेवा आयोगों , गौशालाओं और सहभागियों से आग्रह किया कि वे इस संदेश को जन-जन तक पहुंचायें और गौ आधारित होली को भारत भर में एक अभियान का रूप दें। अंत में सभी वक्ताओं ने एकमत से यह निर्णय लिया कि आने वाले वर्षों में गौ आधारित होली को भारत भर में लोकप्रिय बनाया जायेगा और सभी गौ सेवा आयोग इस दिशा में कार्य करेंगे। जीसीसीआई के संस्थापक डॉ. वल्लभभाई कथीरिया ने वेबिनार में भाग लेने वाले सभी गणमान्य व्यक्तियों का आभार व्यक्त किया और सभी गौ प्रेमियों से आग्रह किया कि रासायनिक रंगों का त्याग कर प्राकृतिक एवं स्वास्थ्यवर्धक होली मनायें।

GCCI INTEGRATING COWISM GLOBAL CONFEDERATION OF COW BASED INDUSTRIES

**गो सेवा आयोग अध्यक्षों ने किया आह्वान**

## सहायक संचालक अमित शुक्ला ने आज धमधा के परीक्षा केन्द्रो का किया औचक निरीक्षण

**रायपुर (नांदगांव टाइम्स)।** सहायक संचालक छत्तीसगढ़ संस्कृत विद्यामण्डलम रायपुर शिक्षा मंडल के सहायक संचालक श्री अमित शुक्ला ने आज मंगलवार 11 मार्च को दुर्ग जिला के धमधा विकासखंड के ? साईं संस्कृत उच्चतर माध्यमिक विद्यालय धमधा के परीक्षा केंद्र का निरीक्षण किया । इस दौरान उन्होंने परीक्षा केंद्रों पर अच्छी सुरक्षा व्यवस्था, बैठक वयवस्था, प्रश्नपत्र वितरण और छात्रों के बैठने की व्यवस्थाओं का जायजा लिया।



निरीक्षण के दौरान श्री शुक्ला ने बताया कि धमधा परीक्षा केंद्र मेनारायणी संस्कृत विद्यालय नंदनी और स्वामी सुजानन्द वैदिक गुरुकुल सगनी के बच्चे भी धमधा परीक्षा केंद्रों मे परीक्षा दे रहें है केन्द्राध्यक्ष श्री नवीन कुमार देवांगन के देख रेख मे परीक्षा संचालित है. जहा प्रबंधकों को आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिए, ताकि परीक्षा सुचारू रूप से संपन्न हो सके। उन्होंने परीक्षार्थियों से बातचीत कर उनकी समस्याएं जानी और परीक्षा संबंधी किसी भी प्रकार की कठिनाई के समाधान के निर्देश दिए। श्री शुक्ला ने कहा कि छत्तीसगढ़ मे संस्कृत विषय के प्रति अगले शिक्षा सत्र मे रूचि जागृत करने के लिए राज्य स्तर पर योजना बनाई जायेगी. ताकि अधिक से अधिक बच्चों को इसका लाभ मिले. परीक्षा बहुत अच्छे संचालित करने के लिए राज्य और जिला स्तर पर सभी परीक्षा केंदो मे अच्छी व्यवस्था बनाने के लिए आवश्यक कदम उठाए गए हैं और किसी भी प्रकार की गड़बड़ी बर्दाशत नहीं की जाएगी। श्री अमित शुक्ला आज धमधा ब्लॉक के बोर्ड परीक्षा का निरीक्षण किया.आज मंगलवार दिनाक 11 मार्च 2025 को अचानक साईं संस्कृत उच्चतर माध्यमिक विद्या धमधा परीक्षा परीक्षा केंद्र* का निरीक्षण किये जहाँ पर परीक्षा बहुत अच्छे से संचालित पाया।

## 15 एवं 16 मार्च ग्राम हैदलकोड़ो में फाग प्रतियोगिता आयोजित

**राजनांदगांव (नांदगांव टाइम्स)।** सर्विदित है कि प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी विकासखंड छुरिया के ग्राम हैदलकोड़ो (गैंदाटोला) में होली त्यौहार के पावन अवसर पर बस्तरिया सेवक परिवार और समस्त ग्रामवासी द्वारा दो दिवसीय फाग महोत्सव का आयोजन 15 एवं 16 मार्च को किया जा रहा है। ग्राम के नवनिर्वाचित सरपंच श्री होमकुमार साहू ने बताया कि फाग महोत्सव में झांकी वर्ग में पुरस्कार प्रथम 5001/- द्वितीय 3001/- तृतीय 2001/- चतुर्थ 1001/- पंचम 701/- षष्ठम 501/- उसीप्रकार गायन वर्ग में पुरस्कार प्रथम 7001/- द्वितीय 3001/- तृतीय 2001/- चतुर्थ 1001/- पंचम 701/- षष्ठम 501/- रखा गया है। इसके अतिरिक्त सभी प्रतिभागी मंडली को सदाबहार पुरस्कार एवं विशेष पुरस्कार भी दिया जाएगा। आयोजक समिति के सदस्य किशोर साहू, भिुनेश्वर, मनसुख, ईश्वर, खुमेश, विक्की, वैभव, मुकेंद्र,गुलाब, लीला, भोलू, प्रवीण, डोमन,सुरेंद्र, डेमन, छोटू बड्डू, अश्वंत, मिशन, बबलू, बुधारू, साथ ही अन्य सहयोगी सदस्य सम्मिलित हैं।

# एकल अभियान के 10 दिवसीय नवीन आचार्य प्रशिक्षण वर्ग का समापन

**राजनांदगांव (नांदगांव टाइम्स)।** एकल विद्यालय के नवीन आचार्य वर्ग जो की 1मार्च से 10 मार्च 2025 तक एकल कार्यालय डोंगरगढ़ मां बम्लेश्वरी की छत्र छाया में आयोजित की गई थी भारत माता के तैल चित्र पर दीप प्रज्वल के साथ समापन समारोह आरंभ हुआ अंचल संरक्षक परम आदरणीय श्री विश्वनाथ यादव जी के विशेष आशीर्वाद के साथ उनके सानिध्य में संपन्न हुई उक्त अवसर पर श्री विश्वनाथ यादव जी ने अपने आशीर्वचन में कहा कि एकल विद्यालय भारत को पुन: वैभव के शिखर की ओर ले जाने के लिए अग्रसर है प्राथमिक शिक्षा आरोग्य शिक्षण जागरण शिक्षा ग्राम विकास एवं संस्कार पांच विषयों के माध्यम से भारत की खोये हुए वैभव एवं ज्ञान को पुन: जागृत करने का भागीरथी प्रयास कर रहा है इस प्रयास में हम सभी का योगदान सदैव एकल विद्यालय के साथ खड़ा रहेगा। एकल विद्यालय अंचल राजनांदगांव के प्राथमिक शिक्षा प्रभारी श्री जागेश्वर निषाद जी ने एकल विद्यालय की प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए कहा एकल विद्यालय ने वनवासी समाज को उनकी मूल संस्कृति से जोड़ने का एक अद्भुत प्रयास किया है। यह संस्था न केवल शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वावलंबन में योगदान दे रही है, बल्कि भारत के ग्रामीण और वनवासी क्षेत्रों में सांस्कृतिक जागरूकता भी बढ़ा रही है। एकल विद्यालय के प्रयासों ने हज़ारों परिवारों के जीवन को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। एकल विद्यालय के अंचल अध्यक्ष श्री विनित यादव जी ने कहा कि एकल अभियान के तहत छात्र छात्राओं को शिक्षा के साथ साथ संस्कार, भारतीय संस्कृति की जानकारी, हिंदू ग्रंथों का ज्ञान, पर्यावरण, स्वच्छता आदि कार्य के माध्यम से नवजागरण का कार्य किया जाता है उन्होंने कहा कि यहां पर 10 दिवसीय अभियान में प्रशिक्षित आचार्य ग्राम स्तर पर जाकर इस ज्ञान का प्रचार प्रसार करेंगे। इस समापन कार्यक्रम में उपस्थित श्री विश्वनाथ यादव जी (अंचल संरक्षक राजनांदगांव ) श्री विनित यादव जी (अंचल अध्यक्ष अंचल राजनांदगांव ) श्री जागेश्वर निषाद जी ( अंचल प्राथमिक शिक्षा प्रभारी) श्रीमति अंचला ठाकुर जी ( अंचल महिला समिति सचिव ) श्री जैन कुमार मेश्राम जी ( अंचल जागरण शिक्षा प्रभारी ) श्री अमनबृज नामदेव जी ( अंचल युवा प्रभारी ) श्री अनिल सिन्हा जी ( सक्रिय सदस्य ) श्री अंजोरी राम जी सदस्य श्री प्रेम सिंग सिरसो जी ( संभाग अभियान प्रमुख छत्तीसगढ़ )श्री जगत राम यादव जी अंचल अभियान प्रमुख श्री धनराज मंडावी जी अंचल प्रशिक्षण प्रमुख अंचल राजनांदगांव एवं समस्त संच प्रमुख आचार्य गण उपस्थित रहे।

# शहर के शुरू के वार्ड में साफ सफाई देखने पहुचे आयुक्त

**राजनांदगांव (नांदगांव टाइम्स)।** आगामी स्वच्छता सर्वेक्षण को ध्यान में रखकर निगम आयुक्त श्री अतुल विश्वकर्मा प्रतिदिन वार्डो में जाकर साफसफाई देख, लोगो से रूबरू हो सफाई के संबंध में जानकारी ले उनकी समस्या से अवगत हो रहे है। आज उनके द्वारा शहर के प्रारंभिक वार्ड में से वार्ड नं. 1,2 व 3 के नवागांव, दीवान टोला, मोतीपुर में साफ सफाई देख लोगो से चर्चा किये।आयुक्त ने मोतीपुर सुलभ शौचालय मरम्मत कार्य का जायजा लेकर शेष कार्य जल्द पूर्ण करने कहा। वही के चिकन सेन्टर में दुकान के बाहर चिकन बेचने पर संबंधित को दुकान के अंदर रख विक्रय करने, साफसफाई रखने समझाईस दिये। उन्होने स्वास्थ्य अधिकारी श्री राजेश मिश्रा से कहा कि समझाईस उपरांत भी बाहर समान रखने पर फाईन लगावे। इसी प्रकार दुकान के बाहर समान फैलाकर रखने वालो पर कार्यवाही करे। दीवान टोला में कुछ क्षेत्रो में पानी की कमी कि पार्षद श्री सावन वर्मा द्वारा जानकारी देने पर संबंधित को निरीक्षण करने निर्देशित किये। उनके द्वारा साफ सफाई देख ग्रामीण वार्ड को ध्यान में रखकर अच्छे तरीके से सफाई करने वार्ड प्रभारी को निर्देशित किये। दीवान टोला मे ही घर के नल से पानी बहते पाये जाने पर संबंधित को बंद करके रखने समझाईस देते हुये कहा कि आगे के क्षेत्र में पर्याप्त पानी नही पहुच पाता और आप पानी बहा रहे है। आयुक्त श्री विश्वकर्मा नवागांव में अवंती बाई मूर्ति के पास बिल्डिंग मटेरियल, रेती, गिट्टी बिखरे देख, संबंधित को नोटिस जारी कर जुर्माना लगाने कहा। उन्होंने लोगो से रूबरू हो सफाई एवं अन्य समस्या के बारे में चर्चा किये, और कहा कि आगामी दिनों में स्वच्छता सर्वेक्षण होने वाला है, अत: आप लोग भी स्वच्छता अपनाये, अपने आस पास के लोगो को भी समझाईस देवे। नवागाव सेनिटेशन पार्क देख साफ सफाई रखने, कचरा व्यवस्थित निपटान करने प्रभारी को निर्देशित किये। स्वच्छता सर्वेक्षण को ध्यान मे रखकर आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित करने कहा।



## धर्म समाचार....

# संत कबीर की सीख : जब तक काम पूरा न हो जाए, सतर्क रहें

लापरवाही और अभिमान से अंतिम समय पर काम बिगड़ जाते हैं

अधिकतर लोग मेहनत करते हैं, लेकिन सफलता कुछ ही लोगों को मिलती है। इसके पीछे एक बड़ा कारण है ङ्क लापरवाही और अभिमान। कई बार अंतिम पड़ाव पर की गई छोटी-सी लापरवाही भी बड़े नुकसान का कारण बन सकती है। इसलिए जब तक लक्ष्य पूर्ण न हो जाए, हर कदम पर सतर्क रहना आवश्यक है।

**कबीर का दोहा और इसकी सीख**

संत कबीर का एक प्रसिद्ध कहा है-

पकी खेती देखिके, गरब किया किसान।

अजहूं झोला बहुत है, घर आवै तब जान।।

इस दोहे में च्अजहूं झोलाज् का अर्थ है झमेला या कठिनाइयां। जब किसान अपनी पक चुकी फसल को देखकर प्रसन्न होता है, तब उसमें अभिमान आ जाता है। लेकिन जब तक फसल को बिना किसी बाधा के सुरक्षित रूप से अपने घर तक नहीं ले लाया जाता है, तब तक किसान को अपनी सफलता नहीं माननी चाहिए। यही सिद्धांत जीवन के हर क्षेत्र में लागू होता है।

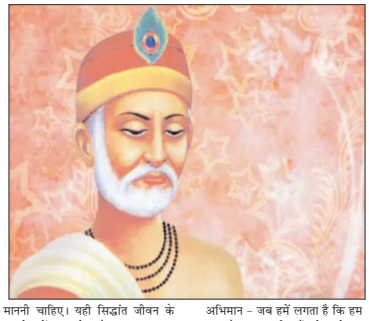



**सफलता के मार्ग में बाधाएं**

हमारे कार्यों में कई प्रकार की बाधाएं आ सकती हैं। इनमें से दो मुख्य कारण हैं:

अभिमान - जब हमें लगता है कि हम सफलता के बहुत करीब हैं, तो कई बार हम अभिमानी हो जाते हैं। यह अहंकार हमारी सफलता में सबसे बड़ी बाधा बन सकता है।

लापरवाही - कार्य पूरा होने से पहले ही खुद को विजयी मान लेना, सावधानी छोड़ देना और प्रयासों में कमी करना असफलता का कारण बन सकता है।

**अभिमान और लापरवाही से कैसे बचें ?**

अभिमान से बचने के लिए और सफलता को सुनिश्चित करने के लिए इन बातों को जीवन में उतारें-

निरंतर प्रार्थना करें - भगवान का आभार मानें और विनम्रता बनाए रखें। प्रार्थना करने से हमारा अहंकार दूर होता है।

सतर्कता बनाए रखें - जब तक कार्य पूरी तरह से सफल न हो जाए, तब तक सावधानी न छोड़ें।

समर्पण और विनम्रता अपनाएं - ये गुण हमें सही दिशा में बनाए रखते हैं और आत्मविश्वास को संतुलित रखते हैं।

सफलता की राह में मेहनत के साथ-साथ सतर्कता और विनम्रता भी जरूरी है। जब तक लक्ष्य पूरी तरह प्राप्त न हो जाए, तब तक हमें सावधानी बरतनी चाहिए। संत कबीर का ये दोहा हमें यही सिखाता है कि असली सफलता तब है, जब कार्य पूर्ण हो जाए।

## स्वामी विवेकानंद का प्रेरक प्रसंग:हमें भगवान से भौतिक सुख-सुविधाएं नहीं, आत्मविश्वास, प्रसन्नता और ज्ञान मांगना चाहिए

स्वामी विवेकानंद से कई ऐसे प्रसंग हैं, जो हमें जीवन में सही रास्ता चुनने में मदद करते हैं। स्वामी विवेकानंद ने प्रारंभिक जीवन में कई कठिनाइयों का सामना किया, इसके बावजूद वे सच्ची भक्ति करते रहे और अपने अध्यात्म के लक्ष्य की ओर बढ़ते रहे। स्वामी विवेकानंद के बचपन का नाम नरेंद्र था। नरेंद्र का बचपन कठिनाइयों से भरा था। पिता के निधन के बाद परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। उनकी मां ने जैसे-तैसे घर चलाने का प्रयास किया, लेकिन कई बार खाने की व्यवस्था भी करना कठिन हो जाता था। बालक नरेंद्र को कई बार भूखे पेट रहना पड़ता था। वे अपनी मां से ये कहकर घर से बाहर निकल जाते थे कि उन्हें कहीं और भोजन के लिए जाना है, लेकिन असल में वे खाली पेट ही गलियों में घूमते रहते थे।

**जब विवेकानंद को मिला परमहंस जी का सान्निध्य**- कठिन परिस्थितियों में भी विवेकानंद का मन आध्यात्मिकता की ओर लगा हुआ था। वे श्रीरामकृष्ण परमहंस के सान्निध्य में आ चुके थे। किसी ने परमहंसजी को बताया कि विवेकानंद कई दिनों से भूखे हैं। तब परमहंसजी ने उन्हें माता काली की मूर्ति के समक्ष जाकर भोजन मांगने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि नरेंद्र, तुम्हारे ऊपर काली मां की कृपा है। जाओ और उनसे भोजन मांगो। वे मां हैं, तुम्हारे भोजन की व्यवस्था जरूर करेंगी। परमहंस जी की बात मानकर जब विवेकानंद काली माता की मूर्ति के समक्ष पहुंचे तो उन्हें भोजन मांगने का विचार आया, लेकिन जैसे ही वे मूर्ति के सामने खड़े हुए, उनके भीतर एक गहरी अनुभूति जागृत हुई। उन्हें एहसास हुआ कि जब मां स्वयं उनके सामने हैं और शांति-आनंद प्रदान कर रही हैं तो फिर भोजन जैसी तुच्छ चीज क्यों मांगनी चाहिए। विवेकानंद ने सोचा कि जीवन में मांगने योग्य केवल आनंद और आत्मज्ञान है, न कि भौतिक सुख-सुविधाए। वे बिना किसी भौतिक वस्तु की कामना किए पूर्ण आनंद में डूब गए और अपनी भूख तक भूल गए। बाद में जब ये बातें स्वामी विवेकानंद ने परमहंस जी को बताई तो वे बहुत भावुक हो गए और बोले कि नरेंद्र, तुम समझ गए कि जीवन में किससे क्या मांगना चाहिए।

- क्रिकेट किट
- फुटबाॅल
- हॉकी किट
- योगा मेट

स्वाती स्पोर्ट्स

खिलाड़ियों एवं विद्यार्थियों के लिए विशेष छूट...

क्रिकेट, हॉकी, कबड्डी, वॉलीबॉल, खो- खो, बैडमिंटन, बास्केट बॉल, थ्रो बॉल, शॉपट बॉल, हाई जम्प, बॉक्सिंग रिंग, टेनिस बॉल, स्पोर्ट्स बॉल, रैकेट बैग, स्पोर्ट्स बॉटल, स्पोर्ट्स बैग, बैडमिंटन नेट, स्कोरल टेबल, बोर्ड गेम्स, टी- टी टेबल,टी-टी बॉल, टेबल टेनिस बैट, टी-टी बैट, ट्रेक शूट, जिम सामग्री, स्पोर्ट्स शूज, स्कूल बैग सहित सभी खेल सामग्री उपलब्ध...

स्टेडियम परिसर, कलेक्टोरेट के सामने राजनांदगांव, मो. 99819-65770, 88393-71971

# भगवान राधाकृष्ण भक्तों के संग होली खेलने 14 मार्च को निकलेंगे मंदिर से

## केसरिया रंगों से रंगेंगे भक्त एवम भगवान, सुमधुर भजनों के साथ नृत्य करेंगे युवक, बच्चे एवं बुजुर्ग, श्री सत्यनारायण मंदिर समिति का भव्य आयोजन



**राजनांदगांव (नांदगांव टाइम्स)।** संस्कारधानी नगरी राजनांदगांव में पिछले 33 वर्षों से रंगोत्सव का त्यौहार श्री सत्यनारायण मंदिर समिति के तत्वावधान में नागरिकों की रंगोत्सव समिति द्वारा बड़े ही हर्षोल्लास के साथ भक्ति एवं श्रद्धा पूर्ण मनाया जाता है। फागुन शुक्ल पूर्णिमा को होलिका दहन के पश्चात चैत्र कृष्ण एकम को श्री सत्यनारायण मंदिर में प्राण प्रतिष्ठित अखण्ड ब्राह्मण नायक भगवान राधाकृष्ण स्वयं अपने भक्तों के साथ होली खेलने के लिए भव्य रथ पर सवार होकर शहर के प्रमुख मार्गों से निकलते हुए फागुन महोत्सव का आनंद भक्तों को प्रदान करते हैं। ज्ञातव्य है कि भगवान राधाकृष्ण मंदिर के गर्भगृह में विराजमान होते है, वर्ष में केवल दो बार जिसमें फागुन शुक्ल पूर्णिमा को भक्तो के साथ होली खेलने एवम दूसरी बार भादवा शुक्ल ग्यारस को डोला में बैठकर रानी सागर में जल क्रीड़ा करने ही भगवान मंदिर से बाहर निकलते है। केवल इन्हीं दो महोत्सव के अवसर पर ही आमजन बिना किसी भेदभाव के अपने आराध्य को स्पर्श करके पूजन, अभिषेक कर प्रसाद अर्पण कर सकते है, अन्य दिवस भगवान गर्भगृह में विराजमान रहते है, जहां केवल मंदिर के आचार्य का ही प्रवेश होता है। श्री सत्यनारायण मंदिर रंगोत्सव समिति द्वारा प्रतिवर्ष गंज के बालाजी मंदिर के समक्ष होने वाले होलिका दहन के दूसरे दिन रंगोत्सव का त्यौहार मनाए जाने की परंपरा रही है, इसी आधार पर बालाजी मंदिर के होलिका दहन 13 मार्च को आधार मानते हुए 14 मार्च को रंगोत्सव मनाए जाने का निर्णय लिया गया है। देश के अनेक धार्मिक स्थलों एवम वृंदावन में भी धुलेंडी (रंगोत्सव) 14 मार्च को ही मनाया जा रहा है अत: श्री रंगोत्सव समिति द्वारा भगवान राधाकृष्ण की शोभायात्रा 14 मार्च शुक्रवार को सुबह 09:00 बजे निकाली जाएगी।

श्री सत्यनारायण मंदिर समिति के अध्यक्ष अशोक लोहिया ने जानकारी दी कि मंदिर समिति वर्षो से हिंदू संस्कृति के विभिन्न त्योहारों को सार्वजनिक रूप से मनाती आ रही है। इसी तारतम्य में 33 वर्ष पूर्व रंगोत्सव की यह परंपरा समिति के वरिष्ठ सदस्य, नगर के प्रतिष्ठित, सामाजिक कार्यकर्ता श्रद्धेय स्व. नथमल जी अग्रवाल की प्रेरणा से प्रारंभ की गई थी। यह आयोजन संस्कारधानी नगरी की गरिमा के अनुरूप मनाया जाता है। इस वर्ष 14 मार्च शुक्रवार को 34वें रंगोत्सव का त्यौहार धूमधाम से मनाए जाने हेतु व्यापक तैयारियां की जा रही है। विज्ञप्ति के अनुसार राष्ट्र में प्रचलित शास्त्रोक्त मतानुसार फागुन शुक्ल पूर्णिमा के दिन भक्तराज प्रह्लाद को अग्नि द्वारा समाप्त करने के राक्षसी प्रयास से होलिका स्वयं जलकर समाप्त हो गई थी। अत: प्रतिवर्ष सनातन समाज द्वारा लाखो वर्षो से फागुन शुक्ल पूर्णिमा को होलिका दहन कर भक्त प्रह्लाद के रक्षा की स्मृति में चैत्र कृष्ण प्रतिपदा को रंगोत्सव का त्यौहार पूरे देश में मनाया जाता है। यह उत्सव बसंतोत्सव के नाम से भी जाना जाता है, इसके कई मनोवैज्ञानिक एवम सामाजिक महत्व है। प्रकृति को पूजने वाला समस्त सनातन समाज, मनीषियों व संतो ने प्रकृति प्रदत्त मान्यताओं की अवधारणाओं को ग्रहण कर इस प्राचीन परंपरा को संजोए रखा है। इसी परंपरा का निर्वहन करते हुए मंदिर समिति ने सार्वजनिक रूप से संस्कारधानी नगरी में भव्य शोभायात्रा की शुरुवात की है।

श्री सत्यनारायण मंदिर समिति अध्यक्ष अशोक लोहिया, सचिव सुरेश अग्रवाल, कोषाध्यक्ष हरीश अग्रवाल, उत्सव प्रभारी लक्ष्मण लोहिया, राजेश शर्मा, श्याम खंडेलवाल, पवन लोहिया, सदस्य राजेश अग्रवाल, सौरभ खंडेलवाल, राहुल अग्रवाल द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार समिति की आयोजित बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि इस वर्ष रंगोत्सव पर नवीनता लिए भव्य रथ को तैयार किया जावेगा। रथ के पृष्ठ भाग में आर्च रहेगा उसके सामने भगवान राधाकृष्ण की बड़ी मूर्ति रहेगी एवम दो गोपियां नृत्य करते हुए दिखाई देगी। एकदम सामने मंदिर में प्राण प्रतिष्ठित अखंड ब्रह्मांड नायक युगल सरकार भगवान राधाकृष्ण विराजमान होंगे। जिस पर आम नागरिक बिना किसी जाति-धर्म, ऊंच-नीच, अमीर-गरीब के भेदभाव से ऊपर उठकर रंग, गुलाल, इत्र चढ़ाकर भोग प्रसाद लगा सकेंगे। रथ से ही फव्वारों द्वारा भक्तो के ऊपर केसरिया रंग की फुहार लगातार होती रहेगी। इस शोभायात्रा में उपयोग किया जाने वाला केसरिया रंग विशेष होता है। जिसे अपने ऊपर डलवाने के लिए भक्त लालाइत रहते है।श्री सत्यनारायण मंदिर रंगोत्सव समिति की ओर से जानकारी दी गई है कि भगवान राधाकृष्ण की भव्य शोभायात्रा प्रारंभ होने के पूर्व भगवान राधाकृष्ण को मंदिर के गर्भगृह से रथ में बैठाया जायेगा। रथ में भगवान राधाकृष्ण के विराजमान होने के पश्चात पूजा एवम आरती होगी तथा ठीक सुबह 9 बजे शोभायात्रा प्रारम्भ होगी, शोभायात्रा के मार्ग में अनेक भक्तो द्वारा स्वप्रेरणा से अपने आराध्य भगवान राधाकृष्ण एवम उनके ग्वाल बालो का स्वागत सत्कार ठंडाई, मिष्ठान, शीतल पेय, पेयजल, जलपान, फल इत्यादि से किया जाता है। इस वर्ष अनेक स्थानों पर रंगों के फुहारे से केसरिया रंग की बारिश किए जाने की तैयारियां की जा रही है। शोभायात्रा को भव्यता प्रदान करने सभी भक्तों की एकरूपता को ध्यान में रखते हुए इस वर्ष सभी भक्तों के लिए दुपट्टे मंगाए गए हैं। रंगोत्सव समिति द्वारा मंदिर के समक्ष रथयात्रा प्रारंभ होने के समय उपस्थित सभी भक्तों को दुपट्टा पहनाकर सम्मानित किया जाएगा। शोभायात्रा की विशेषता यह होती है कि प्रत्येक भक्त केसरिया रंग में रंगा होता है। रंगोत्सव समिति ने आमजनो से आग्रह किया है कि शोभायात्रा में शामिल भक्तो के ऊपर लाल, गुलाबी एवम केसरिया रंगों एवम गुलाल का प्रयोग करे। काले रंग, तैलीय रंगो का प्रयोग वर्जित रहेगा। संस्कारधानी के सभी भजन मंडलियों एवम भजन गायकों को इस अवसर पर फागुन के भजन गायन के लिए आमंत्रित किया गया है। संस्कारधानी की सभी भजन मंडलियों एवम गायक कलाकारों से चर्चा कर सहमति प्राप्त की जा चुकी है। समिति ने श्रद्धालु भक्तो से शोभायात्रा में शामिल होकर धर्म लाभ प्राप्त करने का आग्रह किया है। शोभायात्रा के मार्ग में पड़ने वाले घरों की माता-बहने एवं बंधु अपने-अपने घर के सामने भगवान राधाकृष्ण का पूजन कर भगवान के साथ होली खेल सकती है।

# राजनांदगांव के बाबा रामदेव मंदिर में होली पर बच्चों को ढूंडना की अनूठी रस्म

**राजनांदगांव (नांदगांव टाइम्स)।** स्थानीय बाबा रामदेव मंदिर में हर साल होली के अवसर पर आयोजित होने वाली पारंपरिक च्बच्चों को ढूंढने की रस्म इस वर्ष भी विधि-विधान से संपन्न होगी। मंदिर के पुजारी कोमल तंवर इस परंपरा का निर्वहन करेंगे।



यह अनूठी परंपरा राजस्थान, विशेषकर मारवाड़ क्षेत्र में प्रचलित रही है, जिसमें लोकगीतों के माध्यम से नवजात एवं तीन वर्ष तक के बच्चों के उज्वल भविष्य, उत्तम स्वास्थ्य और सुख-समृद्धि की कामना की जाती है। घूमने को लेकर आमतौर पर राजस्थानी या मारवाड़ी भाषा में गीत गाए जाते हैं जो बच्चों और गांव वालों के बीच आसानी से पहुंचती है इसमें मां-बाप परिवार और समुदाय की ओर से बच्चों के लिए दुआएं होती है उदाहरण के लिए ऐसे गीतों में सुखी रहो यश कमाओ लंबी उम्र पांव जैसे भाव देखने को मिलते हैं। डूंडना और इससे संबंधित गीत मनोरंजन नहीं होता बल्कि यह एक तरह का सामाजिक संस्कार भी है। होली का समय बसंत ऋतु में आता है जो नई शुरुआत और उर्वरता का प्रतीक है। नवजात बच्चों को इस उत्सव में शामिल करना और उनके लिए गीत गाना एक शुभ संकेत माना जाता है और गांव के बड़े बुजुर्ग इन गीतों के जरिए बच्चों को आशीर्वाद देते हैं। यह सामुदायिक एकता को भी मजबूत करता है। वर्षों पुरानी यह परंपरा अब शहरीकरण के बावजूद भी राजस्थान के मारवाड क्षेत्र में कम नहीं हुई है। राजनांदगांव में इसे स्वर्गीय खाती जी ने जीवंत रखा और अब बाबा मंदिर के संस्थापक निर्माणकर्ता बाबा बुलाकिदास तंवर एवं उनके गुरु महाराज मनकामेश्वर महाराज के आशीर्वाद से कोमलजी तंवर इसकी निरंतरता बनाए हुए है। उनके साथ बाबा भक्त अमरचंद तंवर,करण तंवर,अक्कु शर्मा,राजु तंवर,उमेश तंवर,अनुराग हूंका,मुकेश शर्मा,दिनेश शर्मा,मुकेश रमेश शर्मा आदि

**50 वर्षों से अधिक पुरानी परंपरा**

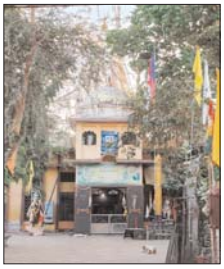

सदर बाजार के लूणकरण खाती, जिन्हें च्मदमस्त रसियाज् के नाम से जाना जाता था, ने इस परंपरा को राजनांदगांव में वर्षों तक जीवंत बनाए रखा। वे अपने साथियों के साथ चग की थाप में न केवल सदर बाजार की होली को जीवंत बनाए रखा बल्कि इस डूंडने की परंपरा को भी कायम रखा। लूण जी खाती एवं राजस्थानी सोनी,सेन एवं अन्य समाज के रसियों द्वारा यहां होली का रंग ऐसा जमता था कि इसकी तुलना दिल्ली के सदर बाजार व करोलबाग से की जाती थी। लूणकरण खातीजी के निधन के बाद स्थानीय लोगों के भावों को पढकर स्थानीय रामदेव बाबा मंदिर में इस परंपरा को पुजारी कोमल तंवर इसे आगे बढा रहे है।

**13 और 14 मार्च को दिन भर चलते रहेगा यह आयोजन**

मंदिर के पुजारी कोमल तंवर ने बताया कि इस वर्ष होलिका दहन 13 मार्च को होगा। उसी दिन सुबह मंगल आरती के बाद से यह धार्मिक अनुष्ठान शुरू होगा। जो भी परिवार मारवाड़ी परंपरा के अनुसार अपने छोटे बच्चों को इस रस्म में शामिल कराना चाहते हैं, वे 13 और 14 मार्च को बाबा रामदेव मंदिर आ सकते हैं।बच्चों को लोकगीतों और भक्ति संगीत के साथ आशीर्वाद दिया जाएगा। इस अवसर पर भगवान के गुणगान के साथ उनके सुखद भविष्य की मंगलकामनाएं की जाएंगी। यह आयोजन क्षेत्र में सांस्कृतिक एवं धार्मिक परंपराओं के संरक्षण का महत्वपूर्ण उदाहरण है।

**आज बाबा मंदिर की रात होली के नाम**

आज रात बाबा की आरती के बाद रात 9 बजे से बाबा के समक्ष जमकर रंग,गुलाल व फूलों की होली खेली जाएगी। इसमे शहर के सभी भजन मंडलियो के गायक व भक्तगण उपस्थिति देकर विगत् वर्षो की तरह होली को यादगार बनाएंगे। मंदिर के पुजारीद्वय शरद एवं कोमल तंवर ने सभी बाबा भक्तो से इस आयोजन मे हाजिरी लगाकर आनंद उठाने का अनुरोध किया है।

# डामरीकृत सडकों पर एवं विद्युत खंभो व तारों के नीचे होली न जलाने

**आयुक्त अतुल विश्वकर्मा ने की अपील**

**राजनांदगांव (नांदगांव टाइम्स)।** निगम आयुक्त श्री अतुल विश्वकर्मा ने नागरिकों से अपील की है कि होलिका दहन के लिये हरे-भरे पेड,पौधों की कटायी नहीं की जानी चाहिये बल्कि इसके लिये सुखी एवं बेकार पड़ी लकड़ी इस्तेमाल करनी चाहिए,जिससे पर्यावरण को संरक्षण प्रदान किया जा सके। इसके साथ ही उन्होंने नागरिकों से होलिका दहन पक्की डामरीकृत सड़को पर तथा विद्युत खंभो एवं तारों के नीचे नहीं करने की अपील की है। उन्होंने कहा कि विद्युत खंभा या तार के नीचे होलिका दहन करने से आग लगने की संभावना बनी रहती है और तार मे आग लगने से विद्युत प्रभाव में अवरोध उत्पन्न होगा। आयुक्त श्री विश्वकर्मा ने कहा है कि नागरिको की सुविधा के लिये कुछ दिनों पूर्व ही शहर की सडको में डामरीकरण किया गया है, चुकि सड़कों पर होलिका दहन से सड़के खराब होंगी और राशि का अपव्यय होगा। इसलिये खुली जगह में होलिका दहन किया जाये, इसका कडाई से पालन किया जाये। आयुक्त ने निगम के अधिकारियो व कर्मचारियों से कहा है कि होलिका दहन स्थलो का निरीक्षण कर संबंधितो को समझाईस देवे कि वे सड़क के बीच या डाकरीकृत सड़क में होलिका दहन न करें। उन्होंने होली त्यौहार के दौरान जल का अपव्यय कम से कम करने की भी अपील की है। क्योकि इस वर्ष गर्मी के प्रथम माह से ही शिवनाथ नदी का जल स्तर कम हो गया है और पूरे गर्मी माह भर नागरिकों को पेयजल उपलब्ध कराना है।



# जिला साक्षरता प्राधिकरण अंतर्गत संचालित उल्लास अभियान की बैठक संपन्न

**राजनांदगांव (नांदगांव टाइम्स)।** कलेक्टर श्री संजय अग्रवाल की अध्यक्षता में आज कलेक्टोरेट सभाकक्ष में जिला साक्षरता प्राधिकरण अंतर्गत संचालित उल्लास अभियान की बैठक आयोजित की गई। बैठक में राष्ट्रीय व्यापी महापरीक्षा अभियान बुनियादी साक्षरता एवं संध्या ज्ञान आंकलन परीक्षा एवं उन्मुखीकरण के संबंध में विस्तार से चर्चा की गई।

उठावना



अत्यंत दु:ख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि

श्री किशोर ललवानी

सुपुत्र : स्व. श्री गेनचंद जी ललवानी

का निधन 11 मार्च 2025 मंगलवार को हो गया है

विधि के विधान के आगे हम सभी नतमस्तक हैं.

उठावना- 12 मार्च 2025, बुधवार

समय- सुबह 10.30 बजे

स्थान- निज निवास, सदर बाजार, राजनांदगांव

नोट- उठावना के पश्चात शोक संताप समाप्त हो जाएगा.

शोकाकुल

अशोक, संतोष, विजय ( भाई ), प्रणय, राहुल, रौनक, रजत ( भतीजा ), प्रतीक ( पुत्र ), जशवर्धन, ग्रन्थ, लक्ष्य ( पोते )

ललवानी परिवार, राजनांदगांव

# हिन्दू संस्कृति का प्रमुख त्यौहार होली पर्व धूमधाम से मनाये, जमकर पानी बहावे

## 364 दिन पानी बचावे, 1 दिन हिन्दू संस्कृति के त्यौहार पर जमकर गीली होली खेले

**राजनंदगांव (नांदगांव टाइम्स)।** हिन्दू संस्कृति के प्रमुख त्यौहार होली पर्व को सभी भक्त मिल जुलकर धूमधाम से मनावे। यह पर्व रंगों का पर्व है, होली का सीधा संबंध पिचकारी से भरे रंगों से होता है , बिना पानी के होली की कल्पना सम्भव नही है । श्री सत्यनारायण मंदिर समिति के अध्यक्ष अशोक लोहिया द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार होली पर रंग ना खेले, पानी बचावे, सुखी होली खेले जैसे मैसेज पिछले कुछ वर्षों से विभिन्न वाट्सएप एवम सोशल मीडिया के माध्यम से प्रचारित किए जा रहे है । जिसे हमारे ही अपने लोग बिना कुछ सोचे समझे आगे फारवर्ड करने की होड़ में अपनी संस्कृति को भूलते जा रहे है ,जो उचित नहीं है। होली के दिन जी भरकर रंग खेले , जी भरकर पानी बहावे और अपनी सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखे। हम वर्ष के 364 दिन पानी बचावे और एक दिन होली का पूरा आनंद उठावे , होली का त्यौहार गीले रंगो की फुहार का पर्व है । कुछ शरारती तत्व ऐसे त्यौहारों के अस्तित्व को समाप्त करने के उद्देश्य से उल - जलूल मैसेज भेजते है , ऐसे मैसेज को तुरंत डीलिट करें । ऐसे लोग जो 364 दिन या अन्य त्यौहारों पर पानी बचाने की बात नहीं करते और केवल होली या हिन्दू त्यौहारों पर पानी बचाने की बात करते हुए , सुखी होली खेलने की सलाह देते है , उनका एवम उनके मैसेज का बहिष्कार करें , जो ऐसे मैसेज भेजते है ऐसे लोगो के मैसेज तुरंत डिलीट कर दे। उसे कतई आगे ना भेजे । श्री सत्यनारायण मंदिर से 14 मार्च 2025 को निकलने वाली भगवान श्री राधाकृष्ण की भव्य शोभायात्रा में शामिल होकर होली का वास्तविक आनंद प्राप्त करे, ऐसा आग्रह है।

**पानी बचाने के नाम पर हिन्दू संस्कृति का विरोध करने वाले मैसेज का बहिस्कार करे**

# कलेक्टर ने संवेदनशीलतापूर्वक जनसामान्य की सुनी शिकायत एवं समस्याएं

## जनदर्शन में प्राप्त आवेदनों का प्राथमिकता के साथ निराकरण करने के दिए निर्देश



**राजनांदगांव (नांदगांव टाइम्स)।** कलेक्टर श्री संजय अग्रवाल ने आज मंगलवार को जिला कार्यालय के सभाकक्ष में आयोजित साप्ताहिक जनदर्शन में जिले के विभिन्न स्थानों से आए जनसामान्य की शिकायत एवं समस्याओं को संवेदनशीलतापूर्वक सुनी। कलेक्टर श्री अग्रवाल ने संबंधित विभागीय अधिकारियों को प्राप्त सभी आवेदनों को प्राथमिकता के साथ शीघ्र निराकरण करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि दूरस्थ क्षेत्रों से जनसामान्य यहां आते हैं, उनकी समस्याओं का निराकरण करते हुए उन्हें शासन की विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत लाभान्वित करना है। आवेदनों का अवलोकन कर नियमानुसार पात्र हितग्राहियों को शासकीय योजनाओं से लाभान्वित करने के लिए कहा। कलेक्टर ने सभी अधिकारियों को उनके विभाग से संबंधित आवेदन प्रदान कर शीघ्र निराकरण करने के लिए निर्देशित किया। जनदर्शन में प्रधानमंत्री आवास योजना से लाभान्वित करने, नक्शा बटांकन, ऑनलाईन रिकार्ड दुरूस्त करने, आर्थिक सहायता, नजूल भूमि का पट्टा बनाने, राशन कार्ड बनवाने, अतिक्रमण हटाने सहित विभिन्न शासकीय योजनाओं से लाभ दिलाने जैसे आवेदन प्राप्त हुए। कलेक्टर श्री अग्रवाल ने जनदर्शन में प्राप्त आवेदनों का प्राथमिकता के साथ निराकरण के लिए निर्देश दिए। बैठक में मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत सुश्री सुरूचि सिंह, नगर निगम आयुक्त श्री अतुल विश्वकर्मा, एसडीएम राजनांदगांव श्री खेमलाल वर्मा सहित अन्य जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित थे।

प्रकाशक, सम्पादक व मुद्रक अशोक कुमार पाण्डे द्वारा आसमा पब्लिसर्श इंडिया (प्रा.) लिमिटेड रायपुर से मुद्रित व गंजचौक राजनांदगांव से प्रकाशित, सम्पादक- अशोक कुमार पाण्डे, मो: 94252-43311 Email: nandgaontimes@gmail.com